ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 01 जुलाई 2018

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 01 जुलाई 2018 से 07 जुलाई 2018

आषाढ़ कृ. – 03 ● वि० सं०–2075 ● वर्ष 60, अंक 26, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 195 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,119 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. पुलिस पब्लिक स्कूल पंचकुला द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

डी.ए.वी. सी.एम.सी. नई दिल्ली के नेतृत्व में हरियाणा के डी.ए.वी. पुलिस पब्लिक स्कूल सैक्टर–25, पंचकुला में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस आयोजित किया गया। दिवस के आयोजन से पूर्व छात्रों, उनके अभिभावकों व डी.ए.वी. के अध्यापकगणों को इस महान दिवस को मनाने के लिए तैयार किया गया।

योग शिविर योग–निर्देशक के नेतृत्व में लगाया गया, योग के निर्देश छात्रों द्वारा उनके अभिभावकों द्वारा, व अध्यापकों के द्वारा अनुसरित किया गया।

योग दिवस गायत्री मंत्र के उच्चारण से प्रारंभ किया गया। इसके बाद योग का अर्थ व उसका महत्त्व बताया गया, आसनों को करने से पहले योगाभ्यास किया गया और उसके बाद कुछ आसन प्रदर्शित किए गए जैसे खड़े होकर करने वाले आसन (ताड़ासन, नटराज आसन, गुरुड़ आसन) बैठकर करने वाले आसन (उदासन, गोमुखासन), लेटकर करने वाले आसन (सलभासन, भुजंगासन, हलासन, चक्रासन)।

अंत में इस कार्यक्रम को शांतिपाठ से समाप्त किया गया। इस अवसर पर स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती वंदना त्रिपाठी ने योग के महत्त्व के द्वारा व्यक्ति के शरीर व मस्तिष्क में सामजस्य के महत्त्व को भी बताया। प्रधानाचार्या ने अभिभावकों को उनकी सहभागिता के लिए धन्यवाद दिया। समारोह के अंत में स्कूल के बैंक एच.डी.एफ.सी. की तरफ से कुछ उपहार दिए गए।

मणिपुर डी.ए.वी. आश्रम की पवित्र भूमि पर हुआ यज्ञ का आयोजन

मणिपुर में डी.ए.वी. आश्रम की पवित्र भूमि पर यज्ञ का आयोजन किया गया। वैदिक मंत्रों के पाठ से निकलने वाली सकारात्मक ध्वनियों ने पूरे वातावरण को उल्लास के साथ गुंजायमान कर दिया। श्री एम.सी. शर्मा, कोषाध्यक्ष एवं चेयरमैन, स्थानीय प्रबंधक समिति, समारोह के मुख्य यजमान थे इसके अतिरिक्त कुछ गणमान्य व्यक्तियों ने उपस्थिति दर्ज कराई जिनमें श्रीमती जे.काकड़िया, निदेशक (पब्लिक स्कूलस), श्री आई.डी.जोशी, प्रबंधक, डॉ. वी.के. काकड़िया, कावि रेलंग, प्रधानाचार्या थीं। इनके अतिरिक्त गांव के स्थानीय सदस्यों ने भी हवन समारोह में भाग लिया।

श्री एम.सी. शर्मा ने उन पवित्र आत्माओं को श्रद्धांजलि दी जिन्होंने अपने समर्पण और प्रतिबद्धता से सरकार से डी.ए.वी. आश्रम की भूमि को प्राप्त किया। उन्होंने डी.ए.वी. को शिक्षा के फैलाने की महान सोच में भरपूर सहयोग देने का आश्वासन दिया।

निदेशक श्रीमती जे. काकरिया ने उपस्थिति लोगों और स्कूल के स्टॉफ को विस्तार से बताया कि आदरणीय प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, आर्य रत्न डॉ. श्री पूनम सूरी वेद प्रचार के कार्यों में हमेशा तत्पर रहते हैं और भारतीय संस्कृति को प्रोत्साहन देते हैं। डी.ए.वी. प्रबंधकर्त्री समिति के प्रांगण में भी अब यज्ञ का आयोजन होता है। श्रीमती जे. काकड़िया ने यज्ञ का महत्व बताते हुए गायत्री मंत्र के अर्थ को विस्तार पूर्वक बताया। समारोह के अंत में श्री आई.डी. जोशी, प्रबंधक ने डी.ए.वी. का धन्यवाद प्रकट किया।

डी.ए.वी. जयपुर में चतुर्थ अन्तर्राष्ट्रीय योग-दिवस

वैशाली नगर स्थित डी.ए.वी. सेन्टेनरी पब्लिक स्कूल में चतुर्थ अन्तर्राष्ट्रीय योग–दिवस मनाया गया। प्रातः 6:00 से 7:00 बजे तक योगार्थियों को योग की विभिन्न विधाओं का अभ्यास कराया गया जिसमें विद्यालय के शिक्षकों, कर्मचारियों के साथ–साथ छात्र–छात्राओं, एन.सी.सी. कैडेट्स, अभिभावकों व स्थानीय आर्य समाज के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

राजस्थान डी.ए.वी. संस्थाओं के क्षेत्रीय निदेशक व विद्यालय के प्राचार्य श्री अशोक कुमार शर्मा ने भी सपरिवार योगशिविर में भाग लिया। प्राचार्य ने समापन सत्र के अन्त में इस गौरवमय सफल आयोजन के लिए सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापित किया और बताया कि योग जोड़ अर्थात् संगठन को कहते हैं। शारीरिक गठन के साथ ही परिवार, समाज व देश में संगठन का प्रयास करते हुए प्रगति की आधारशिला रखें। उन्होंने उपस्थित योगजिज्ञासुओं से योग–यज्ञ के इस महा अभियान में बढ़चढ़ कर सम्मिलित होने का आह्वान किया।

योग शिविर का शुभारम्भ वैदिक–प्रार्थना व समापन शान्ति पाठ के साथ किया गया। प्रशिक्षित योगज्ञ श्री तपेश सैनी ने इस दौरान निर्धारित आसनों,प्राणायाम व ध्यान का अभ्यास प्रतिभागियों को कराया। शिविर के उपरान्त सभी प्रतिभागियों को घृतकुमारी व पालक–पुदीना, अश्वगन्धा व सोमलता प्रतिनिधि गिलोय का स्वास्थ्यवर्धक स्वरस पान कराया गया तथा पतंजलि उत्पाद ज्यूस व दूध बिस्किट्स का वितरण किया गया। सभी प्रतिभागियों नें इस सुन्दर व उपयोगी आयोजन के लिए डी.ए.वी. प्रबन्धन का आभार व्यक्त किया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – **पूनम सूरी**

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 01 जुलाई 2018 से 07 जुलाई 2018

समित्पाणि शिष्य के उद्गार

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

एतास्ते अग्ने समिधः, त्वमिद्धः समिद् भव।
आयुरस्मासु धेहि, अमृतत्वमाचार्याय।।

ऋषिः **ब्रह्मा**। देवता **अग्निः** छन्दः **अनुष्टुप्।**

● **(अग्ने)** हे यज्ञाग्नि! **(एताः)** ये **(ते)** तेरे लिए **(समिधः)** समिधाएँ [हैं], [इनसे] **(त्वं)** तू **(इत्)** निश्चय ही **(सम् इद्धः)** संदीप्त **(भव)** हो। **(अस्मासु)** हम [इनसे] **(त्वं)** तू **(इत्)** निश्चय ही **(सम् इद्धः)** संदीप्त **(भव)** हो। **(अस्मासु)** हम [ब्रह्मचारियों] में **(आयुः)** जीवन, [और] **आचार्याय** (आचार्य) के लिए **(अमृतत्वम्)** अमरत्व **(धेहि)** प्रदान कर।

● मैं समित्पाणि होकर आचार्य के समीप उपनीत होने तथा विद्याध्ययन करने आया हूँ। अपने हाथ में मैं समिधायें इस निमित्त लाया हूँ कि इनसे मैं अग्निहोत्र करूँगा, समिधाओं को एक-एक कर अग्नि में आहुति दूँगा।

हे यज्ञाग्नि! ये तेरे लिए समिधायें हैं, इनसे तू समिद्ध हो, सम्यक् प्रकार से प्रदीप्त हो। देखो, ये शुष्क समिधायें, जो सर्वथा निस्तेज थीं, अग्नि में पड़कर प्रज्ज्वलित हो उठी हैं। ऐसे ही मुझे भी आचार्य-रूप अग्नि का ईंधन बनकर ज्ञान एवं सत्कर्मों से प्रज्ज्वलित होना है। मैं निपट अबोध-अज्ञानी बालक अप्रज्ज्वलित समिधाओं के समान ही निस्तेज हूँ, आचार्याधीन गुरुकुल-वास करके मुझे ज्ञान की ज्वालाओं से प्रदीप्त होना है।

आचार्य और ब्रह्मचारियों के मध्य में जलनेवाली हे यज्ञाग्नि! तू हम ब्रह्मचारियों को आयु प्रदान कर, हमारे अन्दर जीवन निहित कर। हम यही नहीं जानते कि इस संसार में किसलिए आये हैं और हमें कहाँ जाना है तथा जीवन किस प्रकार व्यतीत करना है। जीवन जीने की कला का बोध तू हमें करा। हे अग्नि! तू गुरुकुल की गुरु-शिष्य परम्परा का उज्ज्वल प्रतीक है। जो समिधाओं का और तेरा सम्बन्ध है, वही घनिष्ठ सम्बन्ध गुरुकुल में गुरु और शिष्यों का है। गुरुकुल के व्रतपालन, गुरुकुल की दिनचर्या, गुरुकुल के ज्ञानाग्नि-समिन्धन, गुरुकुल की कर्मपरायणता, गुरुकुल की तपस्या, गुरुकुल के संयम, गुरुकुल के योगानुष्ठान आदि सबका तू प्रतीक है। हे व्रतपति अग्नि! तुझमें समिधायें डालते हुए हम इन समस्त भावनाओं को अपने हृदय में धारण करते हैं।

हे गुरुकुलीय अग्निहोत्र की अग्नि! जहाँ तू हमें जीवन प्रदान करेगी, वहाँ हमारे आचार्य को अमृतत्व प्रदान कर। हम ही अपने आचार्य को मार सकते या अमर कर सकते हैं। हम तुझ अग्नि में तपकर ऐसे जीवन के धनी बनें कि हमसे आचार्य की कीर्ति चारों ओर फैले। जब कोई हमें गुणी और सत्कर्मनिष्ठ देखकर पूछेगा कि ये किस आचार्य के शिष्य हैं, तब हमारे आचार्य का नाम अमर होगा। हम यदि आचार्य के नाम को अमर करने में किंचिन्मात्र भी कारण बन सकेंगे, तो हम अपने को धन्य समझेंगे। हे गुरुकुल के अग्नि! तुम्हारी जय हो, हे गुरुकुल के पुण्यश्लोक आचार्य! तुम्हारी जय हो। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

बोध कथाएँ

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

स्वामी जी ने **'खुदा को भूल गए हैं लोग'** पर कथा सुनाते हुए कहा हम इस आत्मा के रोग की औषधि लेने के लिए संसार के बाज़ार में आए थे और यहाँ आकर भूल गए यहाँ के तमाशों में। जीविका कमाओ, प्रातः कमाओ, सायं कमाओ। इसे आजीविका से छुटकारा नहीं मिलता। **'दुःखों से घबराओ नहीं' पर कहा** जब-जब कष्ट आता है, तब-तब ईश्वर के दर्शन होते हैं। इसीलिए कष्ट आते ही रहें, तो अच्छा है। **'द-दमन, दान, दया'** पर कथा सुनाते हुए कहा देवता उस समय देवता बना है, जब वह अपनी इन्द्रियों का दमन करे। मनुष्य उस समय मनुष्य बनता है, जब तक वह स्वयं दया कर दूसरों को दान दे, दूसरों की रक्षा करें।

आगे पढ़ेंगे तीन लघु कथाएँ

ब्रह्म ज्ञान क्या है?

एक दिन भगवान् कृष्ण के पास नारद जी आए; बोले- "भगवन्! मैं ब्रह्मज्ञान की बात पूछने आया हूँ। क्या है वह ब्रह्मज्ञान? क्यों हम ब्रह्म का दर्शन नहीं कर पाते?"

श्री कृष्ण जी ने कहा- "अभी आये हो। थोड़ी देर बैठो, प्रश्न का उत्तर मिल जायेगा।"

नारद जी बैठे, विश्राम किया; बोले- "अब दो मेरे प्रश्न का उत्तर।"

श्री कृष्ण ने कहा- "आओ, जंगल में घूमने चलें, वहाँ बातें करेंगे।"

दोनों निकल पड़े सैर को। घूमते-घूमते नारद जी काफ़ी थक गये। प्यास भी सताने लगी। श्री कृष्ण ने मुस्कराते हुए कहा- "नारद जी! आपको शायद प्यास लगी है, मुझे भी लगी है। मैं यहाँ बैठता हूँ। आप कहीं से देखकर थोड़ा पानी ले आइये।"

नारद जी बोले- "आप बैठिये, मैं अभी पानी लेकर आता हूँ।" आगे गये तो उन्हें एक कुआँ मिला। एक युवती ने अपने घड़े से पानी पिला दिया। नारद जी पानी पी रहे थे और उसकी ओर देख रहे थे। देखते-देखते मन में मोह जाग उठा। पानी पी लिया और एक ओर खड़े हो गये। वह लड़की घड़े को लेकर अपने घर को चली तो नारद जी भी उसके पीछे-पीछे चल पड़े। उसके घर में पहुँचे तो लड़की के पिता ने उन्हें पहचानकर कहा- "आइये नारद जी! मेरे सौभाग्य कि आपके दर्शन हुए। अब भोजन किए बिना जाने न दूँगा।"

नारद जी भी यही चाहते थे; बोले- "भूख तो लगी है।"

भोजन कर चुके तो बोले- "हम कुछ दिन तुम्हारे घर में रहें तो क्या हो?"

लड़की के पिता ने कहा- "यह तो मेरा सौभाग्य है।"

नारद जी वहीं टिक गये। उस लड़की के रूप का मोह उन्हें पागल किये देता था। मन में जो गिरावट आ गई थी, वह और भी नीचे लिये जाती थी। एक दिन लड़की के पिता से बोले- "मैं चाहता हूँ कि इस कन्या का विवाह मेरे साथ हो जाय।"

लड़की के पिता ने कहा- "महाराज! कन्या तो पराया धन है। मुझे उसका विवाह तो करना ही है। आपसे अच्छा वर उसे कहाँ मिलेगा? मैं विवाह कर दूँगा अवश्य, परन्तु मेरी एक शर्त भी माननी होगी और शर्त यह है कि विवाह के पश्चात् आप मेरे ही घर पर रहें कहीं जायें नहीं।"

नारद जी को और क्या चाहिए था। रमते राम का कोई घर-घाट था नहीं। चिन्ता कर रहे थे कि पत्नी को लेकर कहाँ जायेंगे? बना-बनाया घर मिल गया। शर्त स्वीकार हो गई। विवाह भी हो गया। नारद जी अपने-आप को भूलकर ससुरालवालों के पशु चराते, उनके खेतों में काम करते। उन्हीं के घर में रहने लगे। इस प्रकार कितने ही वर्ष व्यतीत हो गये। गृहस्थी नारद के दो-तीन बच्चे भी हो गये। तभी एक दिन मूसलाधार वर्षा होने लगी। एक दिन, दो दिन, कई दिन होती रही। सब ओर जल-थल एक हो गया। शेष लोग कहाँ-कहाँ गये, यह नारद जी ने नहीं देखा। वह तो अपनी पत्नी और बच्चों को लेकर मकान की दूसरी मंज़िल में चले गये। वहाँ भी पानी पहुँचा तो छत पर चले गये। परन्तु बाढ़ तो रुकी नहीं। पानी जब छत के निकट पहुँचा तो नारद जी ने समझा कि मकान अब बचेगा नहीं। पत्नी और बच्चों सहित पानी में कूद पड़े कि किसी ऊँचे स्थान पर जाकर प्राण बचायें। परन्तु ऐसा करते ही दो बच्चे डूब गए। पत्नी रोने लगी तो नारद बोले- "भागवान्, रोती क्यों हैं? तू भी है, मैं भी हूँ, बच्चे और हो जायेंगे।" परन्तु तीसरा बच्चा भी डूब गया। उसे ढूँढ़ने के लिए नारद जी हाथ-पाँव मार ही रहे थे कि पानी का एक और रेला आया, पत्नी भी डूब गई। बड़ी कठिनता से नारद जी एक ऊँचे स्थान पर पहुँचे। वहाँ भी पानी था। थक बहुत गये थे। तैरने का अब प्रश्न उत्पन्न नहीं होता था, परन्तु धन्यवाद किया कि खड़े हो सकते हैं। पानी छत तक था। तभी पानी ऊपर बढ़ा, कन्धों तक पहुँच गया, फिर ठोड़ी भी डूब गई। पानी होंठों के पास पहुँचा तो नारद जी

शेष पृष्ठ 04 पर ☞

वेद में राष्ट्र का मानचित्र

● भद्रसेन

ओम् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्,
आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्यो ऽतिव्याधी,
महारथो जायताम्। दोग्ध्री धेनु र्वोढानड्वानाशुः
सप्तिः पुरन्धि र्योषा, जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो
युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्,
निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु,
फलवत्यो नः ओषधयः पच्यन्ताम्,
योगक्षमो नः कल्पताम्।। यजु. 22.22

विशेष : वेद इस मंत्र में राष्ट्र का मानचित्र चित्रित कर रहा है, कि इस प्राशासनिक व्यवस्था के किस–किस विभाग का कैसा–कैसा रूप रंग हो? जैसे कि नक्शे में मिट्टी के भेद से प्रदेशों का रूप दर्शाया जाता है अथवा मैदानी, पहाड़ी, रेतीले, पठारी, समुद्रीय स्थलों को भिन्न–भिन्न रूपों में प्रदर्शित किया जाता है अथवा रेलों, सड़कों, नदियों को विशेष संकेतों से संकेतित किया जाता है। ऐसे ही इस मंत्र में राष्ट्र के जीवन को शब्दगत रूप दिया है। राष्ट्र शब्द देश के अर्थ में प्रचलित हो गया है, पर मूल रूप में वह एक प्रशासनिक व्यवस्था है। जीवन शब्द किसी के जीवन्त=जीते–जागते, चाहे जाने वाले रूप को दर्शाता है।

शब्दार्थ : ब्रह्मन्! = हे सब से महान्! बड़ों से भी बड़े! [हमारे] **राष्ट्रे** = नियम, व्यवस्था में चलने वाले देश में **ब्राह्मणः** = बुद्धिजीवी, योजनाओं को सोचने वाले **ब्रह्मवर्चसी** = ब्रह्म तेज युक्त, अपने ज्ञान के अनुकूल जीने वाले, अपने ज्ञान को सार्थक करने में समर्थ, साक्षर [स+अक्षर] अक्षर = ज्ञान के अनुरूप **आ जायताम्** = शोभायमान हों। ऐसे ही **राजन्यः** = राज–काज का कार्य करने वाले शूरः = आगे बढ़ कर कार्यकर्ता, निर्भय, साहसी, विना डरे निर्णय लेने वाले **इषव्यः** = निशानची, [ज़रूरत होने पर] रक्षा की व्यवस्था के लिए अस्त्र–शस्त्र के प्रयोग में कुशल **अतिव्याधी** = हर प्रकार के रोगों से दूर अर्थात् पूर्णतः स्वस्थ **महारथः** = अच्छे से अच्छे वाहनों से युक्त **आ जायताम्** = [इन गुणों से] अच्छी प्रकार से युक्त हों। **धेनुः** = दूध देने वाले पशु **दोग्ध्रीः** = अच्छा दोहन करें, अच्छी मात्रा में दूध दें या वाले हों। **अनड्वान** = भार ढोने वाले [पशु, बैल] **वोढा** = भार वाहन के कार्य में सफल हों। **सप्तिः** = यात्रियों को एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाने वाले वाहन **आशुः** शीघ्र गति से चलने वाले हों। **योषा** = नारी, देश की महिलायें **पुरन्धिः** = पुरं [अपने] शरीर, परिवार, नगर को **धिः** = संभालने में समर्थ हों। **अस्य** = इस **यजमानस्य** = राष्ट्र यज्ञ के कर्ता–धर्ता के **युवा** = जवान, पुत्र, नागरिक **जिष्णुः** = जय की, सफलता की भावना से भरे हुए **रथेष्ठाः** = रथ, वाहन युक्त, उसके चलाने में सक्षम **सभेयः** = सभा के योग्य अर्थात् सामाजिक जीवन में उठने–बैठने, रहने–सहने, बोलने–वर्तने में सफल, सिद्ध और **वीरः** = दुष्टता को हटाने वाले, अपनेपन में अडिग, सत्य पर अटल **जायताम्** = [इन गुणों से भरे हुए] हों। हम राष्ट्रवासी **कामे–कामे** = जब–जब, जहाँ–जहाँ चाहें वहाँ–वहाँ इच्छानुसार **नः** = हमारी **पर्जन्यः** = जल व्यवस्था [का कर्ता बादल] **निनि वर्षतु** = निश्चित रूप से पहुंचे, सफल हो, वर्षा बरसे। जिससे **नः** = हमारी **ओषधयः** = गेहूँ, चना, धान, जौ, तिल, सौंफ आदि अन्न **फलवत्यः** = पकें, फलें जिससे **नः** = हम सब देशवासियों के लिए **योग** = अप्राप्त की प्राप्ति, **क्षेम** = प्राप्त का संरक्षण। रूपी अर्थशास्त्र के सिद्धान्त। **कल्पन्ताम्** = सार्थक हों, पूर्ण हों, चरितार्थ हों। अर्थात् हमारा राष्ट्र भौतिक और नैतिक प्रगति से भरपूर हो।

व्याख्या – मंत्र में राष्ट्र शब्द सप्तमी विभक्ति में है। जिसमें **['आधारो ऽधिकरणम्'** पा. 1, 4, 45] **आधार** = सहारा बनने वाले का संकेत है। अतः उसी का यह सारा अंग–उपांग सहित वर्णन है। यहाँ राष्ट्र का अर्थ (जो कि सीमित रूप में लें तो) होगा–अच्छी प्राशसनिक व्यवस्था, ईकाई। प्रत्येक अपनी और अपनों के जान–माल की सुरक्षा चाहता है। वहीं सभी तरह की प्रगतियाँ होती हैं। **शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्रचिन्ता प्रवर्तते**। और कोई वहीं ही रहना चाहता है। **राष्ट्र** (=प्रशासनिक व्यवस्था) का विपरीत शब्द है **अराजकता** = राज्य, राजा का अभाव अर्थात् जहाँ जान–माल असुरक्षित हो, जहाँ व्यवस्था का अभाव हो, सब कुछ अस्त–व्यस्त हो जहाँ।

ब्राह्मणः–जन्मना वर्ग विशेष के लिए रूढ़ प्रसिद्धि हो गया है। पर ब्रह्म से ब्राह्मण बनता है और ब्रह्म = ईश्वर, वेद = ज्ञान के अर्थ में प्रसिद्ध है। अतः ईश्वर–विश्वासी, पढ़ा–लिखा, समझदार ही ब्राह्मण है। मंत्र में ब्राह्मण के साथ ब्रह्मवर्चसी युक्त होकर आया है अर्थात् ब्रह्मतेज से युक्त। अपनी विद्या को सार्थक करने वाला। इस एक विशेषण से ही उसका सारा परिचय दे दिया गया है। जिसको सिद्ध या सिद्धहसत भी कह सकते हैं। राजन्यः–राज =प्रशासन से सम्बद्ध विधान–कार्य–न्यायपालिका आते हैं। वैसे '**सप्तांग राज्यमुच्यते**' कहा गया है। न्याय–कार्य के अन्तर्गत ही सुरक्षा, सेना–पुलिस को लिया जा सकता है। मंत्र में राजन्य के चार विशेषण आए हैं। शूरः = विधान को लागू करने में निर्भय, साहसी इषव्यः–सुरक्षा की दृष्टि से हथियारों के प्रयोग में प्रवीण अतिव्याधी–रोगरहित, स्वस्थ, सुदृढ़ महारथः–वाहन संचालन, रख–रखाव–सुधार में कुशल। जिससे सारी प्रशासनिक व्यवस्था के लिए सर्वत्र सरलता से समुपस्थित होना सक्षम हो।

अस्य यजमानस्य–यजमान = यज्ञ करने वाले को कहते हैं और अस्य सर्वनाम है, अतः वह यजमान या उसके यज्ञ को स्पष्ट कर रहा है। क्योंकि ऊपर राष्ट्रे शब्द आया है। अतः अस्य से उस राष्ट्रयज्ञ की ही चर्चा है। इस राष्ट्रयज्ञ के करने वाले के युवा=जवान, पुत्र, नागरिक राष्ट्र के विशेष पदों पर आसीनों की दृष्टि से सारे नागरिक युवा पुत्र रूप हैं। हां, राष्ट्र के भविष्य की दृष्टि से युवा शब्द विशेष महत्त्वपूर्ण है, वे ही कल के नेता हैं। युवा के जिष्णु, रथेष्ठा, सभेय और वीर रूप से चार विशेषण हैं। अतः राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक इन गुणों से युक्त हो। युवा–शिक्षा द्वारा ही शिशु शिक्षण–प्रशिक्षण प्राप्त करके कुमार से युवा वय को प्राप्त होते हैं। अतः शिक्षा का संचालन इस प्रकार से हो कि स्नातक बनने तक शिक्षार्थी में ये गुण साकार हो जायें।

जिष्णुः – जयशील, जीत की भावना से भरा हुआ। यह स्थिति व्यक्ति में आत्मविश्वास से ही आती है। अन्यथा व्यक्ति निराश, उदास, हताश होता है और वह तब रचनात्मक सोच वाला न होकर निराशावादी ही हो जाता है।

रथेष्ठाः–रथ में बैठने वाला और रथ शब्द उस वाहन के लिए प्रयुक्त होता है जो तेज गति वाला तथा बैठने में आरामदायक हो। जैसे कि आजकल की कारें। पुराने रथ भी बैलगाड़ी से तेज गति वाले और बैठने में सुविधाजनक होते हैं।

सभेयः – सभा के योग्य को सभेय कहते हैं। जो कि शिष्ट, विनीत, अनुशासित, सामाजिक के लिए आता है। यह शब्द सभा शब्द से ढक् > एय प्रत्यय लगने पर बनता है। सभा–स+भा = साथ–साथ चमकना, रहना, वर्तना अर्थात् समाज, समूह में जीने में निपुण। अतः जो समाज में रहने, उठने–बैठने, वर्तने–बोलने, जीने में सक्षम।

वीरः–आगे बढ़ने की भावना से भरा हुआ, न घबराने वाला, धैर्यशील कर्म विपदा–शत्रु से जूझने वाला। **दोग्ध्रीः धेनुः**–गाय को धेनु उन दिनों कहा जाता है, जिन दिनों वह दूध देती है। अतः हमारे दुधारु पशु पर्याप्त दूध देने वाले हों। कौन दूध कितना गुणकारी है तथा किस प्रकार प्रभूतमात्रा में प्राप्त होता है। ये विचार स्वतः इसके अंतर्गत आ जाते हैं।

वाहन दोनों प्रकार के प्रारंभ से प्रचलित रहे हैं। मंत्र वोढानड्वान्, आशु सप्तिः शब्दों से यही चित्रित कर रहा है। भार और यात्रियों को इधर–उधर लाने ले जाने की भावना मंत्र के अनुरूप आज भी प्रचलित है। **योषा पुरन्धिः**–राष्ट्र की महिलायें अपने **पुर**=देह, परिवार, नगर, देश आदि को संभालने में सब प्रकार से समर्थ हों। **धि**–संभाल शब्द बहुत ही व्यापक अर्थ वाला है। जैसे संतान की संभाल में सन्तान का उत्पादन–पालन विकास और विकासार्थ शिक्षा, चिकित्सा आदि सभी आते हैं। ऐसे ही पुर के सभी सदस्यों की सभी तरह की जरूरतों की संभाल को पुरन्धि शब्द अपने में समेटे हुए है।

पर्जन्यः नः कामे–कामे नि वर्षतु–हम जहां–जहां, जब–जब चाहें, वहां–वहां तब–तब बादल (जल) बरसे। यहां जहां इच्छा के अनुरूप बरसने की प्रार्थना है। वहां इससे यह सन्देश भी है, कि हम अपनी इच्छा, सुविधा के अनुसार जल की व्यवस्था करें। जैसे कि आजकल आधुनिक भवनों में जल की योजना दृगोचर उपलब्ध होती है।

नः ओषधयः फलवत्यः पच्यन्ताम्–जल की व्यवस्था हो जाने पर हमारी फसलें दानों से भरकर पकें। प्राचीन संस्कृतभाषा में ओषधि शब्द जड़ी–बूटियों की अपेक्षा अनाजों–जौ, धान आदि के लिए भी प्रयुक्त हुआ है। जैसे कि **ओषधयः फलपाकान्ताः** मनुस्मृति 1, 46 चरक सूत्र. 1, 73 में आया है अर्थात् फल पकने के साथ जिस का पौधा, बूटा सूख जाए। वैसे फलवत्यः विशेषण और पच्यन्ताम् क्रिया जहां आई हुई हैं। जो कि इस अर्थ को पुष्ट करती हैं, क्योंकि फसलें इन दोनों स्थितियों में अधिक सार्थक होती हैं।

योगक्षेमो नः कल्पताम्–मंत्र निर्दिष्ट सारी व्यवस्थायें चरितार्थ हो जाने पर हम राष्ट्रवासियों को योग=अप्राप्त की प्राप्ति और क्षेम प्राप्त का संरक्षण रूपी अर्थशास्त्र में प्रतिपादित भौतिक विकास तभी सामने आता है। कल्पन्ताम् क्रिया कायाकल्प की परिभाषा को चरितार्थ करती है, स्मरण दिलाती है। राष्ट्र एक भौतिक रूप की भी संरचना है। भौतिक रूप भौतिक पदार्थों से ही प्रत्यक्ष होता है। अतः मंत्र में योजनाओं को बनाने वाले योजनाकार, उन योजनाओं को पूर्व के रूप देने वाले कारीगर, सक्रिय कार्यकर्ता, देशनागरिक, महिलायें, पशु, वाहन, जल–अन्नव्यवस्था जैसे–जैसे हों, इन सब का मानचित्र मंत्र के यौगिक अर्थ रखने वाले शब्द अभिव्यक्त कर रहे हैं। अंत में इन सारी व्यवस्थाओं के सुपरिण ाम को दर्शाते हुए कहा कि ऐसा होने पर ही किसी देश की समृद्धि सुरक्षित रूप में उसके कायाकल्प को प्रत्यक्ष कराती है।

182–शालीमार नगर, होशियारपुर–146001

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से

● वेदप्रकाश शास्त्री

'यज्ञ' शब्द यज् धातु से सिद्ध होता है। जिसका अर्थ है–देवपूजा, संगतिकरण और दान। संसार के सभी श्रेष्ठकर्म यज्ञ कहे जाते हैं। यज्ञ को अग्निहोत्र, देवयज्ञ, होम, हवन, अध्वर भी कहते हैं।

यज्ञ की महिमा का वर्णन करते हुए महर्षि दयानन्द कहते हैं–''सब लोग जानते हैं कि दुर्गन्ध युक्त वायु और जल से रोग, रोग से प्राणियों को दुःख, और सुगन्धित वायु तथा जल से आरोग्य, और रोग के नष्ट होने से सुख प्राप्त होता है। जहां होम होता है, वहां से दूर देश में स्थित पुरुष को नासिका से जैसे सुगन्ध का ग्रहण होता है, वैसे दुर्गन्ध का भी। इतने से ही समझ लो कि अग्नि में डाला हुआ पदार्थ सूक्ष्म होके, फैल के, वायु के साथ दूर देश में जाकर, दुर्गन्ध की निवृत्ति करता है। अग्निहोत्र से वायु, वृष्टि, जल की शुद्धि होकर, औषधियां शुद्ध होती हैं। शुद्ध वायु का श्वास स्पर्श, खानपान से आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम बढ़ता है। इसको 'देवयज्ञ' भी कहते हैं क्योंकि यह वायु आदि पदार्थों को दिव्य कर देता है।''

परोपकार की सर्वोत्तम विधि हमें यज्ञ से सीखनी चाहिए। जो हवन सामग्री की आहुति दी जाती है, उसकी सुगन्धि वायु द्वारा अनेक प्राणियों तक पहुंचती है। वे उसकी सुगन्ध से आनन्द अनुभव करती हैं। यज्ञकर्ता भी अपने सत्कर्म से सुख अनुभव करता है। सुगन्धि प्राप्त करने वाले व्यक्ति याज्ञिक को नहीं जानते और न ही याज्ञिक उन्हें जानता है। फिर भी परोपकार हो रहा है, वह भी निष्काम।

यज्ञ में चार प्रकार के हव्य पदार्थ डाले जाते हैं–

1. सुगन्धित–केशर, अगर, तगर, गुग्गल, कर्पूर, चन्दन, इलायची, लौंग, जायफल, जावित्री आदि।

2. पुष्टिकाराक– घृत, दूध, फल, कन्द, मखाने, अन्न, चावल, जौ, गेहूँ, उड़द आदि।

3. मिष्ट– शक्कर, शहद, छुहारा, किशमिश, दाख आदि।

रोगनाशक–गिलोय, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, मुलहठी, सोंठ तुलसी आदि औषधियां अर्थात् जड़ीबूटियां भी हवन–सामग्री में डाली जाती हैं।

यज्ञ से रोगाणुओं अर्थात् कृमियों का नाश हो जाता है। ये रोगजनक कृमि पर्वतों, वनों, औषधियों, पशुओं और जलों में रहते हैं, जो हमारे शरीर में अन्न और जल के साथ जाते हैं।

मलमूत्र के विसर्जन, पदार्थों के गलने–सड़ने, श्वास प्रश्वास की प्रक्रिया, धूम्रपान, कारखानों–वाहनों–भटठों से निकलने वाला धुआं, संयन्त्रों के प्रदूषित जल, रसायन तत्त्व एवं अपशिष्ट पदार्थों आदि से फैलने वाले प्रदूषण के लिए मानव स्वयं ही उत्तरदायी है। अतः उसका निवारण करना भी उसी का कर्त्तव्य है।

वस्तुतः पर्यावरण को शुद्ध बनाने का एक मात्र उपाय यज्ञ है। यज्ञ प्रकृति के निकट रहने का साधन है। रोग–नाशक औषधियों से यज्ञ रोगनिवारण वातावरण, को प्रदूषण से मुक्त करके स्वस्थ रहने में सहायक होता है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने भी परीक्षण करके यज्ञ द्वारा वायु की शुद्धि को देखकर रोग निवारण की इस वैदिक मान्यता को स्वीकार किया है।

प्रायः लोगों का विचार है कि यज्ञ में डाले गए घृत आदि पदार्थ व्यर्थ ही चले जाते हैं। परन्तु उनका यह विचार ठीक नहीं है। विज्ञान के सिद्धान्त के अनुसार कोई भी पदार्थ, कभी नष्ट न होता बल्कि उसका नहीं है। विज्ञान के सिद्धान्त के अनुसार कोई भी पदार्थ कभी नष्ट नहीं होता अपितु उसका रूप बदलता है। यथा – बर्फ पिघल कर जल रूप में बदलना, जल का वाष्प रूप में बदल कर उड़ जाना। रूप बदलने का अर्थ नष्ट होना नहीं, बल्कि अवस्था परिवर्तन है। बस, यही सिद्धान्त यज्ञ पर भी चरितार्थ होता है। यज्ञ में डाले गए पदार्थ सूक्ष्म होकर आकाश में पहुचँ जाते हैं। यज्ञ में पौष्टिक, सुगन्धित और रोगनाशक औषधियों की हवन सामग्री से दी गई आहुतियों से पर्यावरण की शुद्धि होती है। सभी पदार्थ सूक्ष्म होकर पृथिवी, आकाश, अन्तरिक्ष में जाकर , अन्य जीवजन्तु एवं वनस्पतियां सभी प्रभावित होते हैं।

यज्ञ से शुद्ध हुई जलवायु से उत्पन्न औषधि, अन्न और वनस्पतियां आदि भी शुद्ध एवं निर्दोष होते हैं। वायु, जल आदि जो देव हैं, वे यज्ञ से शुद्ध हो जाते हैं, आकाश मण्डल निर्मल और प्रदूषण मुक्त हो जाता है। यही उन देवताओं का सत्कार है, यही उनकी पूजा है।

अग्नि में समर्पित पदार्थ आकाश मण्डल में पहुँच कर मेघ बनकर वर्षा में सहायक होते हैं। वर्षा से अन्न और अन्न से प्रजा की तुष्टि–पुष्टि होती है। इस प्रकार जो अग्निहोत्र करता है, वह मानो प्रजा का पालन करता है।

परमात्मा ने मनुष्य को बहुत कुछ दिया है परन्तु क्या मनुष्य ने भी परमात्मा को यज्ञ के द्वारा कुछ दिया है? परमात्मा स्वयं वेद में कहता है– **देहि में ददामि ते। तुम मुझे दो, मैं तुम्हें देता हूँ।**

अतः यज्ञ करते हुए बड़े प्रेम से वेदमन्त्र बोल कर आहुति दो जिससे मन शुद्ध, पवित्र और निर्मल बन जाए। प्रदूषण समाप्त हो जाय। जनता खुशहाल हो। विश्व का कल्याण हो।

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से।
जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान् यज्ञ से।।
करना हो यज्ञ प्रकट हो जाते हैं अग्नि देव।
डालो शुद्ध पदार्थ यज्ञ में खाते हैं अग्नि देव।।
सबको प्रसाद यज्ञ का पहुंचाते हैं अग्नि देव।
बादल बना के भूमि पर बरसाते हैं अग्नि देव।।
पैदा अनाज होता है भगवान् यज्ञ से।
होता है सार्थक वेद का विज्ञान यज्ञ से।।
जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान् यज्ञ से।
होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से।।

4–ई, कैलाशनगर, फाजिलका, पंजाब
मो.9463428299

☞ पृष्ठ 02 का शेष

बोध कथाएँ...

चिल्ला उठे– "हे भगवन्, मुझे बचाओ!"

तभी याद आया कि वे तो भगवान् कृष्ण के लिए पानी लेने आये थे। रोकर बोले– "क्षमा करो भगवन्!"

और तब, कहानी है, कि आँख खुल गई। नारद जी ने देखा कि कहीं कुछ भी नहीं है। वे जंगल में पड़े हैं। सामने खड़े श्री कृष्ण मुस्करा रहे हैं। मुस्कराते हुए उन्होंने कहा– "नारद जी! आपके प्रश्न का उत्तर मिल गया है या नहीं?"

प्रकृति की वास्तविकता को समझकर इससे छुटकारा पा लेना ही ब्रह्मज्ञान है। इससे मुक्ति पाये बिना ब्रह्मदर्शन नहीं होता। परन्तु यह प्रकृति माया इतनी लुभानेवाली है कि इसके जाल में फँसा व्यक्ति तभी समझता है, जब नाक तक पानी आ जाता है।

आत्मा ही ब्रह्म को जान सकती है।

केन उपनिषद् में एक बड़ी सुन्दर कथा ब्रह्म को पाने के विषय में आती है। ब्रह्म ने अग्नि, वायु, आत्मा इत्यादि देवताओं का मान बढ़ाने के लिए उन्हें विजय प्राप्त करा दी। इस विजय को पाकर ये देवता अभिमान में आ गये कि संसार में सब शक्ति उन्हीं की है।

यह जानकर ब्रह्म प्रकट हुआ और यक्ष के रूप में सामने आया। देवताओं ने कहा– "यह कौन है" तब अग्नि आगे बढ़ी। यक्ष ने पूछा– "तू कौन है और तेरी शक्ति क्या है?"

अग्नि ने कहा– "मैं जातवेदा अग्नि हूँ और पृथिवी पर जो कुछ है, सबको जला सकती हूँ।"

यक्ष ने एक तिनका फेंककर कहा– "इसे जलाओ!"

अग्नि पूरे बल के साथ आगे बढ़ी, किन्तु तिनके को न जला सकी। असफल हो अग्नि लौट आई और कहा– "मैं नहीं जान सकी, यह यक्ष कौन है।"

तब वायु को कहा गया– "तुम पहचानो, यह कौन है?"

वायु दौड़ गया और यक्ष से कहने लगा– "मैं वायु हूँ और सब–कुछ उड़ा सकता हूँ।"

यक्ष ने उसके सामने तिनका रखकर कहा– "इसे उड़ाओ!"

वायु ने अपनी पूरी शक्ति लगाई, किन्तु वह उसे उड़ा न सका। वायु ने लौटकर कहा– "मैं इस यक्ष को जान नहीं सका।"

तब इन्द्र (आत्मा) को आज्ञा हुई कि तुम जाओ और पता लगाओ कि यह यक्ष कौन है?

इन्द्र आगे बढ़ा तो क्या देखता है कि वह यक्ष लोप हो गया है। अभी वह आश्चर्य में खड़ा ही था कि आकाश में बहुत शोभा–युक्त सुनहरी आभूषण से अलंकृत उमा नाम की एक स्त्री उसके सामने आई। इन्द्र ने उससे पूछा– "यह यक्ष कौन है?"

उमा देवी बोली– "यह ब्रह्म है और इसी की महिमा से तुम देवता महिमावाले हो।"

इस कथा में ब्रह्म की पहचान एक स्त्री ने कराई और बात है भी सत्य। शिव का पता सिवाय उमा के और कौन दे सकता है? इस कथा में बताया गया है कि जड़ देवता, अग्नि, वायु या मनुष्य की इन्द्रियाँ ब्रह्म को सर्वथा नहीं जान सकती, उसे केवल इन्द्र अर्थात् आत्मा ही जान सकता है और वह भी उमा देवी अर्थात् बुद्धि की सहायता से।

जिन खोजा तिन पाइयाँ

प्रजाप्रति ने एक बार घोषणा की– "यह अजर, अमर, पाप से रहित आत्मा ही जानने और खोजने की वस्तु है। जो इनको जान लेता है, वह सब लोकों को प्राप्त कर लेता है सभी इच्छाओं को पूर्ण कर लेता है।" इस घोषणा को देव लोगों ने सुना और असुर लोगों ने भी। दोनों ने कहा– "जिस आत्मा को जान लेने से सभी लोक प्राप्त होते हैं, सभी इच्छाएँ पूर्ण होती हैं, उसे जानना चाहिए अवश्य।"

देवताओं ने इन्द्र को अपना प्रतिनिधि बनाया, असुरों ने विरोचन को। दोनों को प्रजापति के पास भेजा कि "जाओ, पूछकर आओ कि यह आत्मा क्या है?"

दोनों को प्रजापति के पास पहुँचे। दोनों ने प्रणाम करके कहा– "हम यह पूछने आये हैं कि आत्मा क्या है?"

प्रजापति ने मुस्कराते हुए कहा– "पूछने आये हो तो मैं बताऊँगा, परन्तु पहले तुम्हें ब्रह्मचर्य धारण करके 32 वर्ष मेरे आश्रम में रहना होगा।"

दोनों ने ऐसा ही किया। 32 वर्ष व्यतीत हो गए। दोनों ने फिर पूछा– "आत्मा क्या है?"

प्रजापति ने कहा– "शीशा लाओ या

शेष पृष्ठ 05 पर ☞

गोरक्षा और अथर्ववेद

● शिवनारायण उपध्याय

अथर्ववेद में कई विषयों पर विचार किया गया है! व्यक्तिगत जीवन, पारिवारिक जीवन, सामाजिक जीवन, राज्य व्यवस्था, विभिन्न जन–प्रतिनिधियों के अधिकार एवं कर्त्तव्य, सृष्टि उत्पत्ति, आकाश–समय निरन्तरता, पशुपालन, भवन निर्माण आदि अनेक विषयों पर अथर्ववेद में विस्तृत वर्णन है। उसमें गोरक्षा पर भी विचार किया गया है। इस विषय पर अथर्ववेद पर अथर्ववेद काण्ड 18 सूक्त 4 के मंत्र संख्या 30 से 40 तक विचार हुआ है। हम वहीं से इस विषय पर विचार करते हैं।

भारत में गो का बड़ा महत्व है। गाय से हमें दूध प्राप्त होता है और उसी से हम दही और मट्ठा भी बना लेते हैं। दूध से मावा बनाया जाता है और फिर मावे से कई मिठाइयाँ बनाई जाती हैं। गाय के बछड़े बड़े होकर बैल बनते हैं और उनका उपयोग कृषि में खेत जोतने, माल को ढोने आदि में होता है, इसलिए भारत में गोरक्षा की महती आवश्यकता है।

कोशं दुहन्ति कलशं चतुर्बिलमिडां धेनुं मधुमतीं स्वस्तये।
ऊर्जं मदन्तीमदितिं जनेष्वग्ने माहिंसीः परमे व्योमन्।। अथर्व 18.4.30

अर्थ (**कोशम्**) भण्डार तुल्य (**चतुर्बिलम्**) चार छेद (स्तन) वाले (**कलशम्**) कलश को (**इडाम्**) स्तुति योग्य (**मधुमतीम्**) (**मधुररस**) मीठे दूध वाली (**धेनुम्**) दुधैल गो से (**स्वस्तये**) आनन्द के लिए (**दुहन्ति**) मनुष्य दुहते हैं। अग्ने हे ज्ञानी राजन्। (**परमे**) बलदायक रस (**मदन्तीम्**) बढ़ाती हुई (**अदितिम्**) अदीन (और अखण्डनीय) गो को (**मा हिंसीः**) मत मार।

भावार्थ– मंत्र में कहा गया है कि हम गाय से आनन्द दायक रस प्राप्त करने के लिए उसे दुहते हैं। गाय एक सीधा सादा पशु है जो मनुष्य के बीच बलदायक दूध बढ़ाती रहती है। उससे प्रजा की रक्षा होती है। अतः राजा का कर्त्तव्य है कि वह गो वध न होने दे। किसी को गाय को सताने भी नहीं दिया जावे।

एततद् ते देवः सविता वासो ददाति भर्तवे।
तत् त्वं यमस्य राज्ये वसानस्ताप्यै चर।।3।।

अर्थ– (हे मनुष्य)। (**ते**) तेरे लिए (**देवः**) व्हार कुशल (**सविता**) प्रेरक (कपड़ा बनाने वाला पुरुष) (**एतत्**) यह (**वासः**) कपड़ा (**भर्तवे**) पहिनने को (**ददाति**) देता है। (**त्वम्**) तू (**यमस्य**) न्यायकारी राजा के (**राज्ये**) राज्य में (**तार्प्यम्**) तुष्टिकारक (**तत्**) उस वस्त्र को (**वसानः**) पहिने हुए (**चर**) भ्रमण कर।

भावार्थ– न्यायकारी राजा के राज्य में गाय, बैल आदि के उपकार से वस्त्रकार आदि लोग वस्त्रादि बनाते हों। उन वस्त्रों को पहिन कर मनुष्य अपने को ऋतु के प्रकोप से बचाता है। वस्त्र बनाने के लिए कच्चा मान रूई और सन भी बैलों की सहायता से कृषि से ही प्राप्त किया जाता है।

धाना धेनुरभवद् वत्सो अस्य स्तिलोऽभवत्।
तां वै यमस्य राज्ये अक्षितामुप जीवति।। अथर्व 18.4.32

अर्थ–(**अस्या**) इस (गाय) से (**धानाः**) धानिएं (सुसंस्कृत पौष्टिक पदार्थ) और (**धेनुः**) गो और (**वत्सः**) बछड़ा (**अभवत्**) होता है और (**तिलः**) तिल, सरसों आदि (**अभवत्**) होता है। (**यमस्य**) न्यायकारी राजा के (**राज्ये**) राज्य में (मनुष्य) (**वै**) निश्चय करके (**ताम्**) उस (**अक्षिताम्**) बिना सताई हुई (**गो**) के (**उपजीवित**) सहारे से जीता है।

भावार्थ– गो के हम पर अपार उपकार हैं। उससे प्राप्त बैलों की सहायता से हम कृषि कर्म करते हैं, उससे हमें जीवित रहने के लिए सुसंस्कृत पदार्थ– धान, गेहूँ, ज्वार, मक्का, बाजरा आदि खाद्य पदार्थ प्राप्त होते हैं। कृषि के द्वारा ही तिलहन प्राप्त होता है जिससे हमें तेल प्राप्त होता है। वास्तव में किसी भी न्यायकारी राजा के राज्य में इस उपकारी पशु को नहीं सताया जाना चाहिए।

एतास्ते असौ धेनवः कामदुघा भवन्तु।
ऐनीः श्येनीः सरूपा विष्पास्तिलवत्सा उप तिष्ठन्तुत्वात्र।। अथर्व 18.4.33

अर्थ– (**असौ**) हे अमुक पुरुष। (**ते**) तेरी (**एताः**) यह (**धेनवः**) दुधेल गायें (**कामदुघाः**) कामधेनु (**भवन्तु**) होवें। (**एनीः**) चितकबरी (**श्येनीः**) सफेद (**सरूपाः**) एक से रूप वाली, (**विरूपाः**) अलग–अलग रूप वाली (**तिलवत्साः**) बड़े–बड़े बछड़ों वाली गायें (**अत्र**) यहाँ (**त्वा**) तेरी (**उपतिष्ठन्तु**) सेवा करें।

भावार्थ– दुधेल गाय दूध देकर हमारी कामना पूर्ण करती हैं। गायें अलग–अलग रूप की भी होती हैं। और एक से रंग की भी होती है। उनके बड़े–बड़े बछड़े होते हैं जो आगे चलकर बैल बनकर कृषि कर्म में हमारी सहायता करते हैं। अतः हमें चाहिए कि गायों की घास और अन्नादि से उचित सेवा करते रहें। गायें तो हमारी सेवा करती ही हैं।

एनीर्धाना हरिणीः श्येनीरस्य कृष्णा धाना रोहिणीर्धेनुवस्ते।
तिलवस्ता ऊर्जमस्मै दुहाना विश्वाहा सन्त्वनपस्फुरन्तीः।। अथर्व 18.4.34

अर्थ– (हे मनुष्य) (**अस्य**) इस (**ते**) तेरी (**एनीः**) चितकबरी (हरिणीः) पीली (**श्येनीः**) धोली (सफेद) (**कृष्णाः**) काली (**रोहिणीः**) लाल (**तिलवस्साः**) बड़े–बड़े बछड़ों वाली (**अनपस्फुरन्तीः**) कभी न चलायमान होनी वाली (**धेनवः**) दुधेल गायें (**धानाः**) पुष्टिकारक) (**धानाः**) धानियों को और (**ऊर्जम्**) बलदायक रस (दूध,धी आदि) को (**अस्मै**) उस तेरे लिए (**विश्वाहा**) सब दिनों (**दुहानाः**) दूध देती हुई (**सन्तु**) होवें।

भावार्थ– मनुष्य को चाहिए कि अपनी नाना रंग रूप वाली गायों को सावधानी से पालें। उन्हें प्रति सूचक नाम देवें जिससे गायों के दूध घी आदि द्वारा उत्तम–उत्तम भोजन और कृषि कार्य के लिए बड़े–बड़े बैल मिलते रहें। इसी विषय को अगले मंत्र में विस्तार दिया गया है।

वैश्वानरे हविरिदं जुहोमि साहस्त्रं शतधारमुत्सम्।
स बिभर्ति पितरं पितामहान् प्रपितामहान् बिभर्ति पिन्वमानः।। अथर्व 18.4.35.

अर्थ– (**वैश्वानरे**) सब नरों के हितकारी पुरुष के लिए (**इदम्**) इस (**हविः**) ग्रहण करने योग्य वस्तु (**साहस्त्रम्**) सहस्त्रों उपकार वाले (**शतधारम्**) सैकड़ों दूध की धाराओं वाले (**उत्सम्**) स्रोते (**गोरूपापदार्थ**) को (**जुहोमि**) मैं देता हूँ। (**सः**) वह (**पिन्वमानः**) सेवा किया हुआ (गोरूप पदार्थ) (**पितरम्**) पिता आदि बड़े को (**पितामहान्**) दादा आदि मान्य जनों को (**बिभर्ति**) पुष्ट करता है।

भावार्थ– हे मनुष्यो! यह गाय अत्यन्त उपकारी पशु है, यह सभी मनुष्यों द्वारा ग्रहण करने योग्य पशु है। यह मनुष्यों पर सहस्त्रों उपकार करता है, सैकड़ों दूध की धाराओं वाला पशु है। यदि तुम इसकी उचित सेवा करते रहोगे तो यह अपने दूध और दूध से बने पदार्थों द्वारा तुम्हारे पिता पितामह और प्रतिमाह आदि की पुष्टि करता रहेगा।

अगले मंत्र में बताया गया है कि जो मनुष्य अपना शारीरिक और आत्मिक बल बढ़ाना चाहें तो वे गो की रक्षा करके दूध, घी आदि का सेवन करें।

इदं कसाम्बु चयनेनचितं तत् सजाता अव पश्यतेत।
मर्त्योऽयममृतत्वमेति तस्मैं गृहान कृणुत पावत्सबन्धु।। अथर्व 18.4.37

अर्थ– (**इदम्**) यह (**कसाम्बु**) शासन का कीर्तन (**चयनेन**) इकट्ठा करने से (**चितम्**) इकट्ठा किया गया है। (**सजाताः**) हे सजातियो। (**तत्**) उसको (**अवपश्यत**) ध्यान से देखो और (**आ**) सब ओर से (**इत**) प्राप्त करो। (**अयम्**) यह (**मर्त्यः**) मनुष्य (**अमृतत्वम्**) अमरपन (**एति**) पाता है। (**यावत्सबन्धु**) जितने तुम समान गोत्र वाले हो सब मिलकर (**तस्मै**) उस पुरुष के लिए (**गृहान्**) घरों को (**कृणुत**) बनाओ।

भावार्थ– मंत्र में कहा गया है कि इस गो को ध्यान से देखो। यह कितना उपकारी है! यह इकट्ठा किए जाने योग्य पशु है इसे इकट्ठा करो। इसे सब ओर से प्राप्त करो। उस मनुष्य की आयु में वृद्धि होती है जो गया को पालता है! मनुष्य को इस प्रकार के काम से यश प्राप्त होता है। सभी कुटुम्बी लोग उसकी सहायता करते हैं। अब अन्तिम मंत्र देकर विषय को समाप्त करते हैं।

आपो अग्निं प्र हिणुत पितॄँरूपेम यज्ञं पितरो मे जुषन्ताम्।
आसीनामूर्जमुप ये सचन्ते तेनोरयिं सर्ववीरं नियच्छान्।। अथर्व 18.4.40

अर्थ– हे प्राप्ति योग्य गायो। अपने दूध, घी आदि द्वारा पितृगणों की आयु में वृद्धि करती जाओ, उन्हें बढ़ाती रहो। पितृगण मेरे द्वारा की गई इस सेवा को स्वीकार करें। जो पितृगण गाय के दूध, घी आदि का आदर के साथ सेवन करें वे हमें आशीर्वाद और नियम से धन देवें। इतिशम्

शास्त्री नगर, दादाबाड़ी
कोटा (राज.)

☞ *पृष्ठ 04 का शेष*

बोध कथाएँ...

कटोरे में पानी भर लाओ। उसमें देखो। क्या देखते हो उसमें?"

दोनों ने पानी देखा। अपने–अपने शरीर की छाया को पानी में देखा। दोनों प्रसन्न हुए। विरोचन ने समझा कि शरीर ही आत्मा है। असुरों के पास जाकर बोला– "यह शरीर ही आत्मा है। इसे खिलाओ, पिलाओ, सजाओ, कपड़े पहनाओ। इसके लिए मकान बनाओ, मोटरें बनाओ, वायुयान बनाओ। इसी की पूजा करो। यही सब–कुछ है।"

परंतु इन्द्र ने सोचा–प्रजापति तो आत्मा को अजर, अमर, अभय कहते हैं। यह शरीर तो बूढ़ा भी होता है। इसे डर भी लगता है। फिर यह आत्मा कैसे हो सकता? वह फिर प्रजापति के पास गये, बोले–''मेरी तसल्ली नहीं हुई। यह शरीर आत्मा नहीं हो सकता। आप कृपा करके बताइये कि आत्मा क्या है?''

प्रजापति ने मुस्कराकर उसकी ओर देखा, ''विरोचन चला गया। उसकी असुर–बुद्धि है। वह वास्तविकता को कभी जानेगा नहीं, परंतु यदि तुम आत्मा को जानना चाहते हो तो 32 वर्ष और मेरे आश्रम में ब्रह्मचर्य धारण करके रहना होगा।''

इन्द्र ने फिर आश्रम में रहना प्रारंभ कर दिया। फिर 32 वर्ष बीत गये। प्रजापति ने पूरा रहस्य फिर भी नहीं बताया। 32 वर्ष और रहने के लिा कहा, फिर चौथी बार 32 वर्ष रहने को कहा। तब जाकर बताया कि आत्मा क्या है। तब इन्द्र को पता लगा कि शरीर आत्मा नहीं है। जो शरीर की पूजा करता है, वह विनाश की पूजा करता है।

क्रमशः

वैदिक कर्मफल सिद्धांत

● कामता प्रसाद मिश्र

वैदिक मान्यता है कि जीवात्माएँ कर्म करने में स्वतंत्र हैं क्योंकि प्रत्येक जीवात्मा को ईश्वर की न्यायव्यवस्था में अपने अच्छे तथा बुरे किए कर्मों का फल भोगना पड़ता है। शुभ कर्मों का फल सुख तथा अशुभ कर्मों का फल दुःख जीवात्माएँ भोगती हैं। प्रश्न है कि कर्म क्या है। कर्म शब्द **''कृ''** धातु से बना है जिसका अर्थ होता है क्रिया करना। संस्कृत के विद्वानों ने कर्म की परिभाषा की है **'यत्क्रियते तत्कर्म'** अर्थात् जो किया जाता है उसे कर्म कहते हैं। कर्म का अभिप्राय है चेतन द्रव्य की सोची समझी क्रिया। जड़ द्रव्य की क्रिया कर्म नहीं कहलाती। पृथ्वी का अपनी धूरी पर घूमना, सूर्य की ग्रहों द्वारा परिक्रमा करना क्रिया तो है कर्म नहीं। कर्म उन्हें ही कहते हैं जो चेतन द्रव्य–आत्मा द्वारा निश्चयपूर्वक क्रिया (रूप में) किए जाते हैं। आँख का झपकना, दिल का धड़कना आदि नैसर्गिक क्रियायें कर्म के अन्तर्गत नहीं आती।

प्रश्न यह होता है कि कर्म का आरंभ कब से हुआ? इसका सीधा उत्तर है कि जब से शरीर तथा आत्मा का संबंध हुआ। यहाँ यह जानना आवश्यक है कि जिस प्रकार सृष्टि प्रवाह से अनादि है इसी प्रकार जीव तथा शरीर का संबंध अनादि है इसलिए कर्म भी प्रवाह से अनादि है। अतः कर्म का आरंभ नहीं होता। कर्म और जीवात्मा का स्वाभाविक संबंध है अतः जीवात्मा बिना कर्म के नहीं रह सकता। पाणिनी ने अष्टाध्यायी में **'स्वतंत्र कर्त्ता'** सूत्र द्वारा कहा कि कर्त्ता कर्म करने में स्वतंत्र है। कर्त्ता यदि चाहे तो कल्याण का कार्य अर्थात् परोपकार करे, दीन–दुखियों की सेवा करे अथवा अशिव अर्थात् अन्याय, अत्याचार, चोरी, बलात्कार करे। परंतु उसका फल उसके हाथ में नहीं है। जैसा कि महाभारत में कहा है: **'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'**। कर्म करना अधिकार में है परंतु उसका फल नहीं है। फल दाता दूसरा है।

वेद में एक मंत्र में स्पष्ट कहा है :–

न किल्विषमत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रे सममान एति।
अनूनं निहितं पात्रं न एतत् पक्तारं पक्वः पुनराविशति।। अथर्व. 13.3.38

अर्थ– ''कर्मफल के विषय में कोई त्रुटि कभी नहीं होती और किसी की सिफारिश भी नहीं सुनी जाती, ऐसी बातें नहीं होती। यह भी नहीं है कि मित्रों के साथ संगति करता हुआ जा सकता है। कर्मफल रूपी तराजू पूर्ण है बिना किसी घटा–बढ़ी के सुरक्षित रखी है। पकाने वाले को पकाया हुआ पदार्थ, कर्मफल के रूप में आ मिलता है, प्राप्त हो जाता है।''

उपर्युक्त मंत्र में स्पष्ट किया गया है कि ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में प्रत्येक को उसके कर्मों के अनुसार फल प्राप्त होता है। यदि धर्म के मार्ग पर चलकर कल्याणार्थ कर्म है तो इसका फल पुण्य तथा अधर्मपूर्ण कार्य है तो पाप फल प्राप्त होगा। जिसे हम दूसरे शब्दों में धर्म वाले कार्य का फल स्वर्ग (सुख) तथा अधर्म वाले कर्म का फल नरक (दुःख) भोगना पड़ेगा ऐसा कहते हैं। कहा भी है–

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।

प्रत्येक जीव को अपने किए हुए अच्छे एवं बुरे कर्मों के फल को भोगना पड़ता है।

कर्म कितने प्रकार के हैं यदि हम इस विषय में विचार करें तो कर्म का साधन मन, बाणी और शरीर हैं। इनकी दृष्टि से कर्म तीन प्रकार के होते हैं–मानसिक, वाचिक तथा शारीरिक। प्रकृति के तीन गुण होते हैं–सत्वगुण, रजोगुण, तमोगुण। इन्हीं गुणों के आधार पर जो कर्म किए जाते हैं उन्हें सात्विक, राजसिक, सामसिक कर्म कहते हैं। मनु महाराज ने सात्विक कर्मों की व्याख्या इस प्रकार की है–

वेदाभ्यासस्तपो ज्ञानं शौचमिन्द्रियनिग्रह।
धर्मक्रियात्मचिंता च सात्विक गुण लक्षणम्।।
मनु.12.31

अर्थ – जो वेदों का अभ्यास, धर्मानुष्ठान, ज्ञान की वृद्धि, पवित्रता की इच्छा, इन्द्रियों का निग्रह, धर्म के कार्य और आत्मा का चिन्तन होता है यही सत्वगुण का लक्षण है। (स.प्र. नवम समु.)

जो कर्म अहंकार और फल की कामना से अति प्रपण के साथ किया जाता है वह रजोगुणी कहा जाता है। (गीता 18.24)

लोभ, अत्यंत आलस्य और निद्रा, धैर्य का अभाव, अत्याचार, नास्तिकता, एकात्मता का अभाव, जिस किसी से माँगना, प्रमोद अर्थात् मद्यपानादि और दुष्ट व्यसनों में फँसना यह तमोगुण के लक्षण हैं। मनु. 12.33

कुछ कर्मों का फल दृष्य होता है जो इस लोक और इस जन्म में प्राप्त होता है, और अन्य कर्मों का फल अदृष्य है जन्म–जन्मान्तर में मिलता है। जिसे जीव उपर्युक्त कर्मानुसार भोगता है।

फल की दृष्टि से कर्म का एक अन्य विभाजन तीन प्रकार से किया गया है–संचित, प्रारब्ध तथा क्रियमाण। मनुष्य जो कर्म करता है उसे क्रियमाण कहते हैं। जन्म जन्मान्तर के किए हुए तथा उन कर्मों का कोष जिनका फल नहीं प्राप्त हुआ है उन्हें संचित कर्म कहते हैं। संचित कर्मों से जिन कर्मों का फल हम वर्तमान में भोग रहे हैं उसे ही प्रारब्ध कहते हैं इसी प्रारब्ध को लोग दूसरे शब्दों में 'भाग्य' कहते हैं। भाग्य ईश्वर की ओर से नहीं होता अपितु जीवों के कर्मों का कर्मफल ही भाग्य है।

कुछ विचारकों ने कर्म के दो रूप बताये हैं–सकाम कर्म तथा निष्काम कर्म। इस संसार में कामना के बिना कोई कर्म नहीं होता, मनुष्य जो भी कर्म करता है वह कामना के द्वारा ही करता है। संसार में कोई कर्म निष्काम नहीं होता। उसे भले ही मनोभावों से निष्काम बनाया जाय। जैसे माता–पिता अपने संतान का जन्म से पालन–पोषण करते हैं एवं ईश्वर की भक्ति पावन कर्म है किंतु स्वार्थ एवं मुक्ति की कामना न रख कर किया जाए। लोग इन्हें ही निष्काम कर्म की संज्ञा देते हैं।

कतिपय लोगों का मानना है कि ईश्वर ही जीवों से अच्छे बुरे कर्म करवाता है। परंतु यह भ्रांत धारणा है क्योंकि जीव कर्म करने में स्वतंत्र है। यदि ईश्वर कर्म कराता होता, जीव कोई भी पाप कर्म न करता क्योंकि परमात्मा पवित्र एवं धार्मिक होने से किसी जीव को पाप करने की प्रेरणा नहीं करता है अतः जीव कर्म करने में पूर्ण स्वतंत्र है। जीवात्मा और कर्म का स्वाभाविक सम्बंध है अतः जीवात्मा बिना कर्म किए नहीं रह सकता इसीलिए वेद में कहा है–

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समा।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।
यजु. 40.2

अर्थ – ''परमात्मा आदेश करते हैं कि ऐ मनुष्यो आलस्य त्यागकर सत्कर्मों को करते हुए सौ वर्ष या उससे अधिक जीने की शुद्ध मन से कामना करो। क्योंकि यही मनुष्य के लिए श्रेष्ठ मार्ग है। ऐसा करने वाला मनुष्य कर्म में लिप्त नहीं होता। इसके अतिरिक्त दूसरा कोई मार्ग नहीं है।''

उपर्युक्त मंत्र में स्पष्ट कहा गया है कि मनुष्य निष्क्रिय या निष्कर्म होकर जीने की कभी इच्छा न करे। जीवन भर सत्कर्म करते हुए, सेवा कर्म करते हुए जीवे। निठल्ला, निष्क्रिय या निष्कर्म होकर न जीवे क्योंकि कर्म ही मनुष्य की शोभा है। मानव जीवन की सार्थकता है। कर्म ही पूजा है, कर्म ही उन्नति का मार्ग है और सफलता की कुंजी है। चारों वेदों में सर्वत्र मनुष्य को श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा देते हुए जीवन में उन्नति, सौभाग्य और धन अर्जन कर दानादि देकर समाज, देश तथा राष्ट्र के कल्यार्थ कर्म करना उसका परम कर्तव्य बताया गया है। महर्षि दयानन्द जी श्रेष्ठ कर्म करने के लिए सदैव प्रेरित करते रहे, उनका मानना था कि मानव धर्म श्रेष्ठ है तथा मानवता के कल्याण में मनसा, वाचा, कर्मणा संलग्न रहना चाहिए। वह देश ही सुखी, सम्पन्न तथा स्वस्थ माना जाता है जहाँ के लोग कर्मशील व धार्मिक हों। इसलिए ही ज्ञान, कर्म तथा उपासना को भौतिक सुख तथा अध्यात्मिक आनन्द प्राप्ति का श्रेष्ठ साधन माना गया है। इससे हम जहाँ सांसारिक जीवन को सुखी बना सकते हैं वहीं हम ईश्वर प्राप्ति कर मोक्ष के मार्ग को प्रशस्त करते हैं। कर्मफल का मूल उद्देश्य सद्गुणों का विकास कर सुधार करना है।

कई लोग यह प्रश्न करते हैं कि ईश्वर ने जीव को क्यों बनाया? न जीव को बनाता, न जीव इस ईश्वर की दुःखमयी सृष्टि में दुःख भोगता। उन्हें जानना चाहिए कि ईश्वर ने जीव को नहीं बनाया बल्कि ईश्वर, जीव तथा प्रकृति तीन अनादि सताएँ हैं। जिन्हें न कोई बना सकता है न नष्ट कर सकता है। ईश्वर की सृष्टि व्यवस्था में जीव को शरीरधारी बनाकर उसको भोग और कर्म करने का अवसर प्रदान किया गया है। जीव स्वतंत्रता पूर्वक पुण्य का कार्य करके सुख प्राप्त करे तथा यदि पाप कर्म करे तो उसे दुःख प्राप्त होगा। इसी प्रकार जो लोग जीव को ईश्वर का अंश मात्र मानते हैं वह कर्मवाद पर पूर्ण विचार नहीं करते। जीव को ईश्वर का अंश मानना तो ईश्वर को अखण्ड तथा अखण्डनीय मानने से इन्कार करना है। यह दोष ईश्वर पर लागू होगा। जैसे ईश्वर का एक अंश, ईश्वर के दूसरे अंश के यहाँ चोरी करे, बलात्कार करे, हत्या करे आदि बुरे कर्म को दूसरा अंश पुलिस में रिपोर्ट करे, ईश्वर का अंश पकड़ा जाय, वाद न्यायालय, जाय में एक अंश उसे दोषी मानें और दण्ड दे। ईश्वर का एक अंश पाप कर्म करे और दूसरा अंश दण्ड दे। जीव को ईश्वर का अंश मानना न तर्कपूर्ण है न वैज्ञानिक है। हाँ ऐसी काल्पनिक बात तो कल्पना मात्र ही है। ईश्वर पर दोषारोपण है। सत्यता यह है कि जीव सूक्ष्म है, परमात्मा सूक्ष्मतम है, दोनों में व्याप्य–व्यापक संबंध है।

ईश्वर की सृष्टि में जीव को सुख और दुःख दोनो प्राप्त होते रहते हैं क्योंकि दोनों की आवश्यकताएँ हैं। यदि जीव को केवल सुख प्राप्त हो तो वह भी कुछ दिनों के बाद दुःख लगने लगता है और दुःख तो दुःख ही है। **''सुख तो आत्मा का भोजन एवं वरदान है और दुःख अमृत और औषध।''** सुखी होकर आत्मा अच्छे एवं इष्ट काम करने को उत्साहित होता है और दुःख उसे अनिष्ट तथा बुरे, अशुभ काम करने से रोकता है। इस प्रकार सुख और दुःख दोनों आत्म विकास के श्रेष्ठ साधन हैं। अतः सुख–दुःख जीव के कर्मों का फल है।

2475, निराला नगर, शिवपुरी,
सुल्तानपुर–उ.प्र.

विश्व पर्यावरण दिवस

● जीवन लाल आर्य

पर्यावरण शब्द 'परि' उपसर्ग और 'आवरण' शब्द के संयोग से बना है। इसका अर्थ है सब ओर से ढकना अर्थात् चारों ओर से धारण करना। जिस भी वातावरण में हम रहते हैं। जहाँ हम सांस (श्वास–प्रश्वास) लेते हैं। खाते–पीते एवं सभी सांसारिक व्यवहार करते हैं वह पर्यावरण है। **"स्वाहाः यज्ञं मनसः"** यजु. 4.6।

यदि मनुष्य द्वारा वेद रीति और मन–वचन–कर्म से 'यज्ञ' का अनुष्ठान किया जाए तो वह आकाश में रहने वाले वायु आदि पदार्थों को शुद्ध करके **'भूमंडल'** के सभी प्राणियों को सुखी करता है।

पर्यावरण का सीधा संबंध प्रकृति विशेष से है। प्रकृति जड़ पदार्थ है, प्रकृति ही हमें सभी उपभोग्य पदार्थ उपलब्ध करा रही है। पञ्चतत्वों' (वायु, जल, अग्नि, पृथिवी और आकाश) से निर्मित मनुष्य जो **"प्राण और जीव"** के संयोग से गतिशील है। **'जीव'** अल्पज्ञ होने से वह प्रकृति की हरियाली से छला जाता है और स्वार्थी स्वभाव के वश (करण) असीम इच्छा से युक्त हो जाता है और फिर प्रकृति का दुरुपयोग करने लगता है। **"अन्तरिक्षं मा हिंसी"** यजु. 5.43 हे मानव तू अंतरिक्ष की हिंसा मत कर।

पर्यावरण में तीन तत्वों का योगदान है:– **'स्थल भाग' 'जलभाग'** और **'वायु मंडल'**। प्राणी स्थल भाग से भोजन एवं निवास जल भाग से जल और वायु मंडल से प्राण वायु ग्रहा करता है। ये तीनों तत्त्व एक दूसरे के पूरक हैं। मुख्यतः प्रदूषण मनुष्यों द्वारा पर्यावरण में किए गए असंतुलन की स्थिति से उत्पन्न होता है। ये प्रदूषण मुख्य रूप से चार प्रकार के हैं:–

वायु, जल, भूमि, ध्वनि और रेडियों धर्मी प्रदूषण। इन सब में सबसे अधिक महत्वपूर्ण वायु है।

1. **वायु प्रदूषण** कोई भी प्राणी बिना श्वास लिए जीवित नहीं रह सकता क्योंकि वायु ही जीवन का आधार है। **"आपो वाता ओषधयः"** अथर्ववेद– यहाँ वायु के मुख्य रूप से दो गुण है। **'प्राण–वायु'** द्वारा जीवन शक्ति का संचार करना और अपान वायु द्वारा शरीर के सभी दोषों को बाहर निकालना। वायु विश्व भेषज है **"यददो वात ते गृहे अमृतस्य"** ऋ. 10. 186.3 अर्थात् वायु में **'अमृत और आक्सीजन'** है।

2. **स्थल प्रदूषण** वन वृक्षादि ही प्रकाश संश्लेषण द्वारा वातावरण में उत्पन्न होने वाली कार्बनडाई ऑक्साइड गैस को पुनः ऑक्सीजन में परिवर्तित करते हैं। भूकम्प, भू–स्खलन, जलस्रोत सूख जाना, ग्लेशियर समाप्त हो जाना या तेज गति से खिसक जाना आदि सभी से भू–संतुलन बिगड़ जाता है। **"यत्ते भूमे विखनामि क्षिप्रं तदपि रोहतु"** आ. 12. 1.35 अर्थात् जब हम पृथिवी को खोद कर उससे कोयला, गैस तेल व अन्य खनिज पदार्थ को निकालते हैं वह पहाड़ों को काटकर सड़कें बनाते हैं। मंत्र में कहा जाता है कि इन रिक्त स्थानों को भरकर उनमें वृक्ष लगाकर उन्हें आच्छादित कर दें।

3. **जल प्रदूषण** जल को जीवन, अमृत, भेषज, रोगनाशक और आयुवर्धक माना है। मनुष्य के शरीर में 60 प्रतिशत से 70 प्रतिशत भाग **'जल तत्व'** का है। **"अश्वत्थो देवसदनः"** अथर्ववेद – वेदों में अश्वत्थ (पीपल) में देवों का निवास माना है। यह अन्य वृक्षों की तुलना में 'कार्बन डाई ऑक्साइड' की अधिक मात्रा में ग्रहण कर प्रकश संश्लेषण की क्रिया द्वारा अधिक आक्सीजन बनाता है।

4. **वायु प्रदूषण** : वायु के दूषित हो जाने पर समस्त पदार्थों की जीवन शक्ति नष्ट हो जाती है, जिससे नाना प्रकार के भयानक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। वायु प्रदूषण का प्रभाव पेड़–पौधों व अन्य जीव–जन्तुओं पर भी अधिक रहता है क्योंकि पत्तों पर **"धूम्र"** गैस जमने से वृक्षों की वाष्पोत्सर्जन क्रिया न्यून हो जाती है– जिससे दूषित वायु को वृक्ष शुद्ध नहीं कर पाते। इतना ही नहीं इन दूषित वायु और कार्बन डाई आक्सॉइड गैसों से **"ओजोन"** परत में भी विकृति आ गई है। दूषित वायुमंडल से अम्लीय वर्षा (ओला, हिमपात) आदि ऋतु परिवर्तन आदि का संकट उत्पन्न हो जाता है, जिससे वनस्पतियों, जलों तथा मानवों पर कुप्रभाव पड़ता है।

5. **ध्वनि प्रदूषणः** 'ध्वनि' मानव जीवन की पारस्परिक व्यवहार की संवाहिका है। यहाँ तक कि सभी जीव जन्तु भी 'ध्वनि' के माध्यम से ही आन्तरिक भावों की प्रस्तुति करते हैं। ये **"जैविक ध्वनियाँ"** जहाँ व्यवहारिक संबंध सम्पन्न करती हैं वहीं ध्वनि विस्तारक यन्त्र (लाउडस्पीकर) की ऊँची आवाज, मशीनों व मोटर गाडियों की ध्वनियाँ उन सम्बंधों में ह्रास लाती हैं। आज दिल्ली में मकान तोड़कर बहुतायत में बहुमंजिला भवन बनाए जा रहे हैं इन मकानों के तोड़ने पर इनकी भयंकर ध्वनियाँ वायु मंडल में कम्पन पैदा करती हैं। आज सारे विश्व में पर्यावरण अस्थिरता बढ़ती जा रही है। डब्ल्यू एच ओ विश्वस्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया के सबसे प्रदूषित 20 शहरों में 9 भारत वर्ष में हैं जिसमें दिल्ली सबसे प्रदूषित शहर है। आज सबसे बड़ा प्रश्न यही है कि पढ़े–लिखे वर्ग इस बदलते परिवेश से भलीभाँति परिचित हैं परिचित होते हुए भी चुप बैठे हैं।

60 के दशक में दिल्ली में कभी प्रकृति के प्रकोप से **"अष्टग्रह योग"** की दिल्ली आकशवाणी से सूचना प्रकाशित की गई और जगह–जगह पर नुक्कड़ों पर, पार्कों में विशाल यज्ञों का अनुष्ठान किया गया और मात्र 4–5 दिनों में ही उस अष्टग्रह योग का प्रकोप टल गया। यह है यज्ञ के अनुष्ठान का प्रभाव।

पर्यावरण सुरक्षा के कुछ कारगर उपाय :–

1. गौ= माता (गौमाता) का गोबर और मूत्र वैज्ञानिक दृष्टि से बहुत लाभकारी हैं। इससे खाद ही नहीं बनती वरन् यदि गोमय को ठीक ढंग से प्रयोग करें तो यह प्रदूषण मुक्त ऊर्जा का एक बड़ा आधार भी बन सकता है। खेतों में रासायनिक उर्वरक के प्रयोग से मिट्टी की उर्वरा शक्ति तो बढ़ती है लेकिन इसे पश्चात् हर वर्ष ज्यादा खाद का प्रयोग करना पड़ता है। इसके विपरीत गोबर की खाद जमीन को उर्वरता की स्थायी स्तंभ है। गोबर के कण्डों (उपलों) से यदि यज्ञ किया जाए तो उसमें समिधा के मुकाबले कार्बनडाईआक्साइड बहुत कम मात्रा में होती है और यज्ञ में इससे धुआँ भी नहीं होता अपितु यह धूम्र बनकर आकाश वायु में भ्रमण करने वाले विषैले कीटाणुओं को नष्ट कर प्रदूषण को समाप्त करता है।

2. **पशुओं का योगदानः–** सुखमय जीवन हेतु पशु पर्यावरण को यथास्थित बनाए रखने में सहायक हैं। सो इन्हें हिंसित या पीड़ित न किया जाए। **"पशून् पाहि"** यजु. अर्थात् पशुओं की रक्षा करो। पशुओं की हिंसा में जब उन्हें मशीनों द्वारा काटा जाता है तो उनकी भयानक चीख से सारा वायुमंडल काँप उठता है प्रदूषण भला क्यों नहीं फैलेगा?

3. **वृक्षः–** पृथिवी पर अर्थात् इस प्रकृति में वृक्ष वनस्पती जगत का आवरण हैं। वृक्ष ही हमें सभी कुछ देते हैं और स्वयं उसका उपभोग नहीं करते। **अर्णसं गोपथा** ऋ 5.5.46 वर्षा लाने वाले और श्वास प्रक्रिया का पूर्ण सहायक हैं ये वृक्ष। मिट्टी को बहाने से बचाते हैं। नदियों के किनारे भी वृक्ष मिट्टी को खिसकने से रोकते हैं।

4. **यज्ञः–** यज्ञ में द्रव्य पदार्थ जैसे गाय का घी, गोघृत और औषधी युक्त सामग्री और गौ गोबर के कण्डे (उपले) आदि यज्ञ कुण्ड में भस्म होने के पश्चात् वे सूक्ष्म होकर धूम्र बनकर वायु में दूर–दूर तक फैलकर वातावरण को शुद्ध करते हैं– क्योंकि **'यज्ञाग्नि'** में पदार्थों को छिन्न–भिन्न करने की एक अदभुत् शक्ति होती है। 'अग्नि' में पदार्थ हल्का होकर उसकी भेदन शक्ति भी बढ़ जाती है। (ख) अग्नि में घृत की आहुति से कण बिना जले ही वायु में उड़ जाते हैं, जो अतिसूक्ष्म होते हैं। इन कणों की शक्ति अग्नि से प्राप्त गैसों को स्वयं में लीन करके वायुमण्डल को अधिक समय तक पवित्र रखते हैं। ये ही कण वर्षा के लिए **"धूलि कणों"** का कार्य भी करते हैं। गौघृत से हाइड्रोकार्बन गैस (तत्व) यज्ञ कुण्ड में (450डिग्री से 550 डिग्री) तापांश पर आक्सीजन से मिलकर वायु में स्वतः मिलते रहते हैं। आदिकाल में बुद्ध, गुरु नानक, राजा जनक, राम, कृष्ण, युधिष्ठर आदि कोई भी कार्य बिना यज्ञ किये सम्पन्न नहीं करते थे। जापान, चीन आदि देशों में यहूदी, ईसाई एवं मुसलमान आदि भी "महामारी" "अतिवृष्टि" व सूखा पडने के बड़े–बड़े अवसरों पर यज्ञों अनुष्ठान कर अपने मनोरथ को सिद्धि प्राप्त करते हैं।

अतः हम सभी इस देश के नागरिक होने के नाते अपने जन्म दिन पर कम से कम एक पेड़ लगाकर उसे बड़ा करें और साथ ही अपने जीवन को यज्ञ से जोड़कर वायु एवं जल आदि की शुद्धि करें। आओं हम सब मिलकर "संगच्छदवं" की भावना यज्ञ से कर प्रदूषण हटाने में सहायक बनें और आत्मिक सुख शान्ति प्राप्त करें।

आर्य समाज अशोक विहार I दिल्ली–52
मो. 9718965775

शुद्ध हुओं को अपने में घुलने मिलने का अवसर दें

● ओम प्रकाश यादव

भारत पर अनंतकाल से विदेशी आक्रमण होते रहे हैं। कुछ आक्रमणकारी यहाँ बस गए तथा अन्य लूट कर चले गए जैसे मुहम्मद (महमूद) गजनवी। पहले जो विदेशी यहाँ बसे वे शनैः–शनैः आर्य बन गए। पर जब आर्य हिन्दू बने तथा मुसलमानों का आगमन हुआ तो यह प्रथा समाप्त हुई। हिन्दू विधर्मी बनने लगे पर अहिन्दुओं का हिन्दू बनना बन्द हुआ। कहते हैं कि अकबर हिन्दू बनना चाहता था पर काशी से व्यवस्था आई कि गधे घोड़े नहीं बन सकते। घोड़े गधे बन सकते हैं। परन्तु वे वापिस घोड़े नहीं बन सकते। इसका परिणाम यह हुआ कि थोड़ी संख्या में आए विधर्मी संख्या में बढ़ते गए। जाति बाहर किए गए हिन्दू विधर्मी बने तथा अमानवीय व्यवहार न सहने का कारण बहुत से शूद्र विधर्मी बन गए।

महाराजा काश्मीर पूरी वादी को शुद्ध करके उन्हें हिन्दू बनाना चाहते थे तथा इस कार्य के लिए महर्षि दयानन्द को बुलाना चाहते थे पर काश्मीर के पंडितों के जोर देने के कारण काशी से व्यवस्था मँगाई जो कि घिसीपिटी थी कि गधे घोड़े नहीं बन सकते।

अब महर्षि दयानंद सरस्वती का युग आया। महर्षि ने विधर्मियों को हिन्दू धर्म में प्रवेश उचित तथा मान्य बताया। उन्होंने शुद्धि शब्द का प्रयोग किया तथा इसके वैदिक विधि लिखी। उनके शिष्य महात्मा स्वामी श्रद्धानंद ने शुद्धि का बीड़ा उठाया तथा अनेकों को शुद्ध किया। एक धर्मान्ध मुसलमान ने उनकी हत्या कर दी पर जो लहर चली थी वह रुकी नहीं। इटावा जिले के ग्राम बन्थरा के राजपूत मुस्लिम हो गए थे। 1920 के दशक में अलीगढ़ जिले के कुछ ग्रामीण राजपूत बन्थरा पहुँचे और उन्हें वापिस हिन्दू धर्म में आने का आह्वान किया। गाँव के प्रधान ने रोटी बेटी का प्रश्न उठाया। एक राजपूत ठाकुर कर्ण कवि (कविता करते थे) ने कहा मैं तो विवाहित हूँ पर यह मेरा छोटा भाई है इसके योग्य कोई कन्या हो तो अभी विवाह करा दे। रही रोटी की बात आप शुद्ध होकर हिन्दू बनिए तो साथ बैठकर भोजन करेंगे। इस पर प्रधान ने मस्जिद पर कुदाल से प्रहार किया। गाँव के युवाओं ने मस्जिद धराशायी कर। यज्ञ कर शुद्धि हुई। सब ने साथ बैठकर भोजन किया। कुछ लड़कियाँ गाँव से ली गईं। इस प्रकार पूरा गाँव शुद्ध हुआ।

अब 1930 के दशक की बात करें। लाहौर उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश सर शादीलाल थे। वे रेवाड़ी (हरियाणा) के या उसके पास के थे। उनका छोटा भाई कुछ मन्दबुद्धि था। मुसलमानों ने उसको अगवा कर उसको मुसलमान बना कर कहीं छिपा दिया। प्रतिदिन समाचारपत्रों में उसके नाम से संदेश छपवाने लगे 'मुझे रोशनी नहीं थी। इस्लाम ने मुझे रोशनी दी' इत्यादि। शीर्षक होता था 'सर शादीलाल के भाई का इस्लाम के नाम पैगाम।' सर शादीलाल परेशान हुए तथा उन्होंने आर्य समाज तथा संघ के स्वयंसेवकों को उसे कैसे भी ढूँढ लाने को कहा। उन्हें राजकीय कार्य से इंग्लैण्ड जाना था। एक दिन पूर्व आर्यसमाज के स्वयंसेवकों ने उसे लाकर उनके सामने खड़ा कर दिया। वे रो पड़े। बोले 'तूने मेरी इज्जत का कोई ख्याल नहीं रखा। रात को उसे अपने साथ सुलाया। अगले दिन अपने चचेरे भाई लाला मुसद्दी लाल को 100 रूपए दिया कि रेवाड़ी जाकर इसकी शुद्धि करवाओ। शुद्धि मेरे पूजनीय पिताजी स्व. पं. राम स्वरूप जी शास्त्री ने की। पिताजी बताते थे कि इतनी भीड़ उमड़ी कि लड्डुओं का चूरा भी नहीं बचा। इसके पश्चात् पिताजी ने शुद्धि को अपना ध्येय, अपना लक्ष्य बना लिया। उन्होंने सैंकड़ों मुसमानों को शुद्ध कर हिन्दू बनाया। कहते हैं कि उनकी जान को खतरा हो गया था। परन्तु उन्होंने उसकी परवाह न करते अपना कार्य चालू रखा।

पहले जैसे राजपूतों ने राजपूत मुसलमानों को शुद्ध करके अपने में मिला लिया था। वैसा अब प्रायः बंद हो गया है। वैसे पहले भी काशी के प्रसिद्ध विद्वान नीलकंठ शास्त्रार्थ में हार कर ईसाई हो गए थे। उनके प्रपौत्र को शास्त्रार्थ में परास्त कर आर्यसमाजी विद्वानों ने उन्हें पुनः वैदिक धर्म में आने को कहा तो उन्होंने कहा कि कोई भी ब्राह्मण मेरे साथ संबंध नहीं रखेगा तो मैं कैसे वापिस आऊँ? गोवा में एक ईसाई व्यक्ति अपनी दो पुत्रियों समेत शुद्ध हुआ परन्तु किसी भी हिन्दू ने उन लड़कियों से विवाह नहीं किया। अन्त में हार कर उन्होंने पुनः ईसाई बन कर ईसाई लड़कों से विवाह किया। ऐसी अवस्था में हम कैसे शुद्धि का काम चालू रख सकते हैं?

जैसा कि लिख चुका हूँ कि किन कारणों से हम विधर्मी बने उनमें कुछ और भी कारण हैं। उत्तर पूर्व भारत के प्रदेश बहुत ही अगम्य थे। वे विकास रहित तथा अशिक्षित थे। ईसाई धर्मप्रचारक अनेक कष्ट झेल कर वहाँ गए। वहाँ कुछ विकास कार्य किया, स्कूल, कॉलिज खोल कर शिक्षित किया। अब उनमें कई प्रदेश पूर्ण ईसाईमतावलम्बी हैं तो अन्य भी पर्याप्त संख्या में ईसाई। अत्याचार करके तथा बलात् भी परिवर्तन कराया। गोवा से तो इन्किजीशन बुला कर हिन्दुओं पर अत्याचार करके उन्हें ईसाई बनाया। हमारी धार्मिक अन्ध कट्टरता से भी कई हिन्दुओं को विवश होकर ईसाई बनना पड़ा। लालच से भी लोग ईसाई बने। भाईयों में जो ईसाई बना वह संपति का मालिक बना। अन्य भाई वंचित किए गए। मुम्बई के निकट से कहीं एक स्वामी मासूरकर ने गोवा में ईसाईयों को शुद्ध करने का कार्य आरंभ किया। यहाँ तक कि एक दिन उन्होंने 1500 ईसाईयों को शुद्ध किया तो पुर्तगाली प्रशासन ने नियम बनाया कि जो एक बार ईसाई बन गया वह वापिस हिन्दू नहीं बन सकता। इस नियम के चलते जो एक बार ईसाई बन गया वह वापिस हिन्दू न बनने के लिए विवश कर दिया गया।

गोवा में ईसाई धर्मप्रचारों के धर्म परिर्वतन के लिए एक और प्रलोभन देना आरंभ किया। घरेलू काम करने वाली महिलाओं से वे कहते कि ईसाई बनने के बाद उनके बच्चों को मुफ्त में अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में शिक्षा के साथ उन्हें यूनीफार्म, पुस्तकें तथा स्टेशनरी दी जायेगी। उनको रहने के लिए घर और अधिक पैसे देने वाली नौकरी इत्यादि दिए जाएँगे। तो वे महिलाएँ कहती कि इतनी चीजें मिलने के लिए वे क्यों न ईसाई बन जाएँ। हिन्दू धर्म ने उन्हें क्या दिया है?

ऐसा ही एक अनोखा तरीका बिहार में ईसाई धर्मप्रचारकों ने अपनाया है जिसमें वे लगभग अनपढ़ गाँव वालों से कहते हैं कि स्वयंवर से पहले सीता गिरजा (गिरिजा नहीं कहते) की पूजा करने गई थी। तब आप भी सीता मैया की तरह गिरजा की पूजा करने क्यों नहीं आते? वाह गिरिजा–पार्वती को गिरजा (चर्च) बना दिया जबकि ईसा लाखों वर्ष बाद पैदा हुए थे।

समाचार पत्र भी कुछ हिन्दू विरोधी हो गए लगता है। गोवा के स्थानीय समाचार पत्र नवहिन्द टाइम्स में सम्पादक ने सम्पादकीय में तीन जगह ईसाईयों पर हिन्दुओं के अत्याचार बताए। उड़ीसा में एक नन का बलात्कार, रेवाड़ी में एक चर्च को क्षति पहुँचाना तथा मध्यप्रदेश में एक कन्वैंट में ननों पर हमला व छेड़छाड़। मैंने उसी समाचार में छपी खबरों का हवाला देते हुए सम्पादक को पत्र कॉलम में लिख भेजा कि उड़ीसा में उस नन का बलात्कार नहीं हुआ तथा उसने जिस बस में इस घटना को बताया वह उस बस में चढ़ी ही नहीं थी। रेवाड़ी में चर्च में तोड़फोड़ ईसाई युवकों ने की थी तथा मध्य प्रदेश के कन्वेंट में यह ईसाई युवकों ने किया।

गुजरात में गोधरा काण्ड के बाद हिन्दुओं द्वारा हिंसा को बढ़ा–चढ़ा कर लिखा गया पर हिन्दुओं पर हिंसा विषय में एक शब्द भी नहीं।

विधर्मियों ने एक और अनूठा तरीका निकाला है। मुसलमानों ने एक पुस्तक निकाली जिसमें वेदों में हजरत मुहम्मत का वर्णन है। इसमें हिन्दू नामों से भी लेख थे। पर पुस्तक का उत्तर देने में मैं असमर्थ था। इसी प्रकार केरल के एक ईसाई ने अंग्रेज़ी में लेख लिखा। शीर्षक था 'वेदों में ईसा' लेख तो मैने नहीं देखा परन्तु उस पर आधारित स्थानीय दैनिक में सम्पादक के नाम पत्र में छपा जिसमें लिखा था कि ईसा कितनी बड़ी विभूति थे कि उनकी भविष्यवाणी वेदों में भी है। मैने उत्तर किया कि वेदों में कोई भविष्यवाणी नहीं है। वेदों की विषयवस्तु है ज्ञान, विज्ञान, उपासना तथा कर्म। फिर आया कि हिरण्यगर्भ का अर्थ है प्रजापति जिसका अर्थ है ईश्वर का बेटा ईसा। मैंने उत्तर दिया कि ईश्वर का अपना कोई बेटा नहीं है। हम सब ईश्वर की संतान हैं। हिरण्यगर्भ का अर्थ है कि जिसके गर्भ में सूर्यादि प्रकाश हैं तथा 'जातिवेद' का अर्थ है चेतन जगत् का स्वामी। फिर एक ऐतरीय उपनिषद् के एक श्लोक का भ्रष्ट अर्थ छपा। मैनें ठीक अर्थ लिख भेजा। अन्त में भविष्यपुराण में एक श्लोक है कि ईसा नाम का 'मैं' कुमारी माँ का पुत्र हूँ।

मुझे पूरे गोवा में संस्कृत का भविष्य पुराण नहीं मिला तब मैंने एक पुस्तकालय में मराठी भविष्य पुराण पढ़ा वहाँ कही भी ऐसे श्लोक का अर्थ नहीं था। यह सब लिखकर मैंने लिखा कि वैसे भी ईसा शब्द अरबी या फारसी का है इसका प्रयोग संस्कृत के भविष्य पुराण में संभव नहीं है।

इसके पश्चात् मुझसे पूछा गया कि क्या मैं वेदों पर अथॉरिटी हूँ। मैने उत्तर दिया कि नहीं परन्तु मेरे पास अथॉरिटी है जो व्यक्ति देखना चाहे वह मेरे मोबाइल फोन कर मुझसे समय निश्चित करे तथा

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

समाज की उन्नति केवल वैदिक शिक्षा से

● डॉ. विजेन्द्र पाल सिंह

आर्य समाज राष्ट्रोत्थान व समाज की उन्नति हेतु निरंतर प्रयासरत है। महर्षि दयानन्द के हम ऋणी हैं, जिन्होंने देश का गौरव प्राप्त कराने का मार्ग हमें बता दिया। भारत ऐसा देश है जहाँ संसार को श्रेष्ठ बनाने का ज्ञान है, मानवता का ज्ञान है।

आर्य समाज ने देश में बढ़ रही कुरीतियों, बुराईयों को दूर करने का कार्य किया। बाल विवाह, सती प्रथा, मूर्ति पूजा, कब्र मजारों की पूजा, अस्पृश्यता, पर्दा प्रथा, नारी शिक्षा पर जागृति उत्पन्न की। भारत में विधर्मी लोग भारतीयों का मत परिवर्तन कर रहे थे उसके लिए शुद्धि को गति प्रदान की अब भी चारों ओर अशिक्षा, बलात्कार, अपराध, अनैतिकता, दुराचार, मादकता, पाश्चात्यता, साम्प्रदायिकता फैली हुई है एक ओर बेटी बचाओ अभियान चलाया जा रहा है दूसरी ओर बेटियों की दहेज हेतु हत्याऐं हो रही हैं। गला घोट कर जलाकर, विष देकर, प्रताड़ित कर, यातनाऐं देकर मारी जा रही हैं। मृतक श्राद्ध जादू टोना, तांत्रिक कर्म व गुरुडमवाद आज भी बढ़ रहा है हमें इन सभी विषयों पर तेज़ी से कार्य करना है।

शिक्षा की स्थिति आज विस्फोटक हो रही है। शिक्षा में सांप्रदायिकता पसर रही है तभी तो जे.एन.यू. या ए.म.यू. आदि से आज़ादी की आवाज़ें उठ रही हैं। हमें अब शिक्षा की ओर गंभीरता से ध्यान देना चाहिए। शिक्षा पर शिकंजा कसना आवश्यक है। विद्यार्थियों, छात्र छात्राओं का विद्यालयों में भिन्न-भिन्न परिधानों का क्या अर्थ है, विचारणीय है यह। कोई बुर्का में, कोई अर्धनग्न परिधान में कोई गोल टोपी में, कोई टाई वैल्ट में! क्या शिक्षा में विद्यार्थियों की इस प्रकार की साम्प्रदायिक पहचान होनी चाहिए।

पुस्तकों की देखिए तो कान्वैंट विद्यालयों में प्रत्येक कक्षा में भिन्न-भिन्न पुस्तकें, भिन्न-भिन्न लेखक, विषय भी ऐसे जिनसे न देश का ज्ञान, न इतिहास का, ज्ञान न भूगोल का, न ही हमारे महान् पूर्वजों का ज्ञान मिलता है। ऐसे विद्यालय अंग्रेज़ियत से परिपूर्ण हैं जो केवल अंग्रेज़ियत का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं भारतीयता का नहीं।

कहीं मदरसे, कहीं कैथोलिक, कहीं मैथोडिस्ट, कहीं फ्रांसिसी, कहीं जर्मनी कल्चर से परिपूर्ण कान्वैण्ट स्कूल कुकुर मुत्तों की भांति मत सम्प्रदाय की शिक्षा को महत्व दे अपना व्यवसाय चला रहे हैं।

आधुनिक स्कूलों का शिक्षा व प्रवेश शुल्क हजारों से लाखों में होता है जो सामान्य व मध्यम वर्गीय की सीमा से बाहर होता है अतः भारत में गरीब की अलग शिक्षा मध्यम वर्ग की अलग उच्च धनाढ्यों की अलग शिक्षा है जहाँ शिक्षा ही अनेक वर्गों में बंटी हो शिक्षार्थियों का क्या होगा?

नैतिक व चरित्र निर्माण की शिक्षा तो है ही नहीं। आज की शिक्षा हाय! हैलो! टाटा! बाय! बाय! की शिक्षा है। वाल्यावस्था से ही माँ, ममी, आंटी, अंकल, डैड, डैडी के शब्द बच्चे के मस्तिष्क में घर कर लेते हैं। चरणस्पर्श का तो नाम ही नहीं नमस्ते कहने में भी संकोच करते हैं और बच्चों को विद्यालयों में ब्याय फ्रेंड, गर्ल फ्रेंड बनाना सिखाया जाता है आगे भी शादी से पहले शादी के बाद भी फ्रैंडशिप का सिलसिला चलता रहता है। कैसे बनेंगे ऐसे बच्चे राम, कृष्ण सीता गार्गी मदालसा? कैसे बनेंगे ऐसे बच्चे मातृ-पितृ भक्त! यही कारण है कि ऐसी शिक्षा प्राप्त सज्जन विदेशों में अथाह धनार्जन व प्रमादयुक्त जीवन जीने हेतु चले जाते हैं या देश में भी रहते हैं परंतु बूढ़े माता-पिता घरों में अकेले कष्ट झेल रहे होते हैं।

कान्वेंट या मैकाले की शिक्षा भौतिकवादी शिक्षा है जहाँ न नैतिकता है, न आचरण, न ईश्वर है न मानवता, उन्हें केवल दिखायी देता है अपना और अपना प्रमादयुक्त जीवन, काकटेल, रेस्तरां, बार, फाइव स्टार होटल शाम को एट पी एम अर्थात् 8PM।

भारत की संस्कृति विश्व की महानतम संस्कृति है जहाँ विश्व के उपकार की भावना है, मानवता की भावना है, चरित्र निर्माण है, नैतिकता है। माता-पिता गुरु, वृद्ध व महापुरुषों हेतु समर्पित हमारा इतिहास गौरवशाली इतिहास रहा है जहाँ मात्र शक्ति का सम्मान रहा है, महिलाओं की रक्षा की गई है। राष्ट्र भक्ति इस शिक्षा का उद्देश्य रहा है। ऐसी शिक्षा पूरे भारत में लागू होनी चाहिए और एक समान शिक्षा हो, आदर्श रूप हो, भारतीय वैदिक शिक्षा हो, गुरुकुल जैसी हो जहां गौतम, कणाद, चाणक्य, विदुर जैसे निडर तेजस्वी ओजस्वी विद्वान हों।

वैदिक शिक्षा व्यवस्था से यह निश्चित है कि जहाँ अर्जुन, भीम, कृष्ण, गार्गी, सीता जैसे ब्रह्मचारी व सन्नारियाँ देवियाँ होंगी न कहीं से आंतकवाद की खबर आएगी न आज़ादी की न बलात्कारियों की।

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात हमें तुरंत शिक्षा व्यवस्था पर ध्यान देना चाहिए था। अभी भी देर नहीं हुई। आइए आज ही इस विषय पर विचार करें। हमारे देश में जो अराजकता साम्प्रदायिकता तोड़-फोड़ हो रही है, वह पाश्चात्य शिक्षा का ही परिणाम है। लूटपाट, बलात्कार इसीलिए हो रहे हैं क्योंकि हमने वाल्यावस्था से विभिन्न सम्प्रदाय, फिरकों समुदायों में शिक्षा को बांट दिया फिर राष्ट्र एकता कहाँ से आएगी।

स्वतंत्रता संग्राम के क्राँतिकारी भाई परमानन्द (सन् 1920) ने अण्डमान की जेल से रिहा होने पर लिखा था- "ऐतिहासिक रिकॉर्डों के अध्ययन से मुझे विश्वास हो गया है कि इस शिक्षा पद्धति का उद्देश्य है कि देश के लोगों के अंदर से राष्ट्रीय भावना, देशभक्ति, और राष्ट्रीय प्रेम मिटा कर उन्हें अंग्रेज़ी भाषा और पश्चिमी सभ्यता की नकल करने वाला बनाया जाए।

हमारे क्राँतिकारियों का यही स्वपन था कि पाश्चात्य शिक्षा पद्धति समाप्त हो। हमारी शिक्षा थी गुरुकुल व आश्रम वाली जहाँ ब्रह्मचर्याश्रम का पूरा पालन होता था। आइये देश बचाना है और उन्नति की ओर ले जाना है तो भारतीय वैदिक शिक्षा को अपनाऐं। आइए चलें वेदों की ओर।

गली नं. 2 चन्द्रलोक कॉलोनी
खुर्जा-203131
मो. 8979794715

☞ पृष्ठ 08 का शेष

शुद्ध हुओं को अपने में घुलने मिलने ...

मैं उसे दिखा दूँगा। पर किसी ने सर्म्पक नहीं किया।

पर ईसाई दूसरे धर्मों पर आक्षेप तो कर सकते हैं परन्तु अनके आक्षेपों का कोई उत्तर दे यह उन्हें स्वीकार्य नहीं। मेरे पुत्र के ईसाई ग्राहकों ने इसका विरोध किया। तब एक ईसाई द्वारा एक लेख में हिन्दू धर्म पर प्रहार किया जिसका विषय तो मैं भूल गया हूँ पर उसका प्रत्युत्तर मैंने प्रणव चतुर्वेदी नाम से लेख लिख कर दिया। इसके पश्चात् ये व्यक्ति चुप हो गए। यदि वैदिक विद्वान् इस प्रकार करें तो इन विधर्मियों को पूर्णतः चुप कराया जा सकता है।

आजकल कुछ हिन्दू संस्थाएँ शुद्धि करती हैं तथा उसका खूब प्रचार करती हैं जिस कारण उनका विरोध होता है। जबकि विधर्मी यह काम चुपचाप, छिपकर करते हैं। हमें भी यह कार्य शान्तिपूर्व बिना किसी प्रचार के करना चाहिए। तभी अधिक सफलता की संभावना है।

सेवा निवृत्ति के समय मैं स्वस्थ था तथा बस्तर इत्यादि पिछड़े प्रदेशों में कार्य करना चाहता था। मैंने विश्वहिन्दू परिषद् तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को पत्र लिखे कि मैं इन प्रदेशों में अथवा आप जिस प्रदेश को कहें वहाँ कार्य करना चाहता हूँ। मैं अपना व्यय तो स्वयं उठाऊँगा परन्तु जो जनता की सेवा में धन लगेगा यदि मुझे दिया जाए तो मैं यथाशक्ति काम करता रहूँगा। परन्तु दोनों ने कोई उत्तर नहीं दिया।

सन्यासी को परिव्राजक कहते हैं अर्थात् जो घूमता रहे। परन्तु आर्य समाज में भी ढोंगी संन्यासी भरे पड़े हैं। गाजियाबाद में स्थित एक आश्रम इनकी भरमार हैं। वहाँ मुफ्त में रहने एवं खाने को मिलता है। ये लोग मृतक श्राद्ध में दावत खाने जाते है तथा अन्य अवैदिक कृत्य करते हैं। परन्तु इनको वहाँ से निकाला नहीं जाता?

जिन आर्यजनों के पास शक्ति तथा समय है वे इस उपरिलिखित कार्य अर्थात् पिछड़े तथा सूदूर प्रदेशों में जाकर वहाँ जनता के सेवा करें उन्हें सरकारी योजनाओं का ज्ञान कराएँ और उनका लाभ उन्हें प्राप्त हो ऐसा प्रयत्न करें विधर्मियों के प्रचार कार्य में शान्तिपूर्वक रोक लगाएँ। आर्यों के विधर्मी होने में रुकावट बनें सभी यथा संभव शुद्धि करें। शुद्ध हुओं को अपने में घुलने-मिलने का अवसर दें तथा उनको अपने से अलग न जाने दें। जिन आर्यों के पास में धन है वे इस शुभ कार्य के लिए आर्थिक सहायता दें। तभी हम **'कृण्वन्तों विश्वमार्यम्'** का लक्ष्य पूर्ण करने की दिशा में अग्रसर हों अन्यथा इस संसार के वैदिक धर्म का लोप हो जाएगा। संन्यासी भी यह कार्य करें।

विजय कुंज, 165 पीडीए कालोनी
परवरी-4030521 (गोवा)

पत्र/कविता

दयानंद तुम याद आते हो

जब होता है जुल्म कहीं,
अन्याय कहीं पर होता है,
तब दयानन्द तुम याद आते हो,
ऋषि दयानंद तुम याद आते हो,
रह–रह कर याद आते हो,
तुम रह–रह कर याद आते हो।।

सत्य अहिंसा के पथ पर,
चलना क्या इतना मुश्किल है,
देश की एकता अखंडता को,
क्या बनाए रखना मुश्किल है,
जब कोई अपना गद्दार–ए–वतन,
गुलशन में आग लगाता है,
तब दयानंद तुम याद आते हो।।

लाख बनालो धन जागीर,
आखिर कुछ साथ ना जाना है,
प्रेम भाव के दो अक्षर,
मरकर जिंदा रख जाना है,
जब दौलत के लालच में,
इन्सानियत शर्मिंदा हो,
तब दयानंद तुम याद आते हो।।

शुक्लोधन वाघमारे
डी.ए.वी. इंटरनेशनल स्कूल,
मुलुंड, मुम्बई

बेटियों ने पापा का दाह संस्कार किया

एक सदी पूर्व आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती की प्रेरणा से प्रभावित मुरादाबाद नगर की चार बेटियों डॉ. कुसुम आर्य, सुमन आर्य, पूनम आर्य और नीलम आर्य ने अपने पूज्य पिता स्व. श्री यशपाल आर्य का अंतिम संस्कार आर्य प्रणाली के अंतर्गत सम्पन्न किया।

62 वर्षीय यशपाल आर्य का आकस्मिक निधन रामगंगा विहार कालोनी में अपने निजी निवास पर हो गया था। यशपाल आर्य के परिवार में चार बेटियाँ ही हैं जिनको यशपाल आर्य ने समस्त साधनों से शिक्षित किया। बेटों के अभाव को बेटियों ने कभी भी मायूसी नहीं आने दी। यशपाल आर्य की पत्नी मंजू देवी के अनुसार हमारी बेटियाँ सदैव बेटों से ज्यादा लाडली रहीं। रूढ़िवादी परम्पराओं को तोड़ने का साहस यदा–कदा ही किया जाता है। शतः शतः नमन।

कृष्णा मोहन गोयल, 113–बाजार कोट
अमरोहा–244221

****

मस्जिदें बनाकर देने वालों से आग्रह

पाकिस्तान में शमशान भूमियों पर उग्रवादियों ने अवैध कब्जे कर लिए हैं। हिन्दुओं, सिक्खों से कहा जाता है कि दाह संस्कार अपने–अपने घरों में, या सड़कों के किनारे कर लिया करो, अन्यथा शवों को, गाढ़ दिया करो। मस्जिदें बनाकर देने वालों से, आग्रह है कि वे पाकिस्तान के शमशान स्थलों को, अवैध कब्जों से मुक्त कराने के लिए हर स्तर पर आवश्यक कारवाई करें ताकि वहाँ के हिन्दू–सिख अपने मृतकों का दाह संस्कार, अपनी परम्परा कर सकें।

इन्द्रदेव गुलाटी
5/491, लक्ष्मी नगर
बुलन्दशहर

****

हम सब पूर्ण गौरक्षा कर सकते हैं

भारत की जनसंख्या का एक प्रतिशत आर्य समाज और गायत्री परिवार के सदस्य होंगे। वे चाहें तो पूर्ण गोरक्षा कर सकते हैं। इनके हजारों लोग हैं जो रोज, लाखों लोग हर हफ्ते या हर माह हवन करते हैं। आर्य समाज और गायत्री परिवार का हर सदस्य सही मायने में गोभक्त है। क्योंकि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा लिखित **''गोकरुणानिधि''** सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है। आर्य समाज+चेतना केंद्रों में हवन सामग्री और समिधा के रूप में लकड़ी उपलब्ध रहती है। करोड़ों हिंदू इनसे ही हवन सामग्री और समिधा खरीद कर हवन करते हैं।

10 से 100% गोरक्षा करने का श्रेय और महान पुण्य आर्य समाज और गायत्री परिवार को तभी मिलेगा जब वह लकड़ी की जगह देसी गोवंश के गोबर के कंडों से हवन करने लगेगा और अपने स्थानों पर समिधा के रूप में कंडे उपलब्ध करायेगा। हजारों गुरुकुल/गायत्री चेतना केन्द्र में गौपालन भी हो रहा है। इन गुरुकुलों/गायत्री चेतना केन्द्र से कंडे लेने लगे तो इनको भी बहुत बड़ा योगदान हो सकता है। अगर सभी कंडों से हवन करने लगे तो मांग को पूरा करने में हजारों गौशालाओं को भी सहयोग मिलेगा। एक काम और करना होगा कि सभी को प्रेरित किया जाये कि वे संकल्प लें कि परिवार में शवदाह गोबर के कंडों पर होगा। श्री विजय लिमये और श्री अरुण बागला के अथक प्रयासों से अनेक शहरों में कंडों से शवदाह शुरू हो चुका है। इसमें शवयात्रा में शामिल लोगों का अनमोल 1 घंटा समय बचता है और 2 दस साल के युवा पेड़ों को प्राण दान मिलता है। इस तरह करोड़ों पेड़ों, पर्यावरण और गोधन की रक्षा होगी। हजारों गौशालायें स्वावलंबी हो जायेंगी।

जलगांव से 7 किलोमीटर पर नत्पिपरी गाँव में 1995 से लगातार 24 घंटे गोबर के कंडों पर ही हवन हो रहा है। कभी–कभी तो सैंकड़ों लोग एकसाथ हवन करते हैं। जिसमें विश्व भर में अग्निहोत्र का प्रचार करने वाले अनेक विदेशी भी सम्मिलित होते हैं। अग्निहोत्र हवन तो केवल गोबर के कंडों पर ही होता है। इनके प्रचारकों द्वारा विश्व में करोड़ों लोग गोबरी का नियमित प्रयोग कर रहे हैं। यह अपने आप में प्रमाण है कि गोबर के कंडों पर हवन होता है। हैदराबाद के महेशजी गोबर के कंडे निर्यात करते थे।

गोहित का यह कार्य कब और कैसे होगा? आर्य समाज और गायत्री परिवार को यह प्रस्ताव समझ में आ जाये तो वह सारे समाज/परिवार को समझाया जा सकता है।

सुदर्शन ढंढारिया
132/1, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता
मो. 8240953884

****

बी.बी.के. डी.ए.वी. कॉलेज ने जीती ओवल ऑल चैम्पियनशिप ट्राफी

नारी सशक्तिकरण के सपने को साकार करने वाली संस्था बी.बी.के. डी.ए.वी. कॉलेज ने एक भव्य समारोह में लगातार सातवीं बार ओवल ऑल जनरल स्पोर्टस चैम्पियनशिप ट्रॉफी प्राप्त की। अलग–अलग खेलों के लिए इसके खिलाड़ियों को 35,00,000/– रुपये के नकद ईनाम प्रदान किए गए।

इस समारोह में प्राचार्या डॉ. पुष्पिन्दर वालिया को प्रतिष्ठित माका ट्रॉफी में अधिकतम योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर के खेल–विभाग द्वारा दशमेश ऑडिटोरियम में आयोजित 48वें वार्षिक पुरस्कार खेल समारोह में माननीय श्री राहुल भटनागर, आई.ए.एस. (युवा खेल मामले एवं खेलें, भारत सरकार, नई दिल्ली) तथा डॉ. गुरुदीप सिंह (उप सचिव, ए.आई.यू. नई दिल्ली) ने महाविद्यालय की 150 खिलाड़ियों को 35,00,000/– रुपये की नकद राशि से सम्मानित किया गया। महाविद्यालय के पाँच अन्तर–राष्ट्रीय साइकिलिस्ट–सुश्री नयना राजेश, पी. अमृथा रघुनाथ, अलीना रेजी, वैष्णवी गभेन और सुश्री आशु शर्मा को 4,28,000/– रुपये 3,46000/– रुपये 2,40,000/– रुपये 2,29,000/–रुपये और 1,00,000/– रुपये का नकद ईनाम दिया गया।

प्राचार्या डॉ. पुष्पिन्दर वालिया ने महाविद्यालय का नाम रोशन करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों प्राध्यापकों, स्टॉफ एवं प्रशिक्षकों को शानदार ट्रॉफी जीतने एवं अद्वितीय सफलता पर ढेरों बधाईयों सहित भविष्य के लिए शुभकामनाएँ प्रदान कीं।

आर.आर. बावा डी.ए.वी. कॉलेज बटाला में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

योग स्वस्थ जीवन का आधार है इसके महत्त्व को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार के यत्नों से 21 जून को यू.एन.ओ. की ओर से अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन निश्चित किया गया।

कॉलेज में योग दिवस पर प्रिंसीपल प्रो. डॉ. नीरू चड्ढा के निर्देशन में एवं श्रीमती दीप्ति कांडा एन.एस.एस. विभाग की अध्यक्षता में, श्रीमती बलजीत कौर एवं सुश्री रुचिका वर्मा के संयोजन में इस दिन को सार्थक करने के लिए कॉलेज छात्राओं को योग आसन करवाये गये। सुश्री रूचिका वर्मा ने इस अवसर पर भिन्न–भिन्न योगासन करवा कर छात्राओं को उनकी महत्ता से परिचित करवाया। सूर्य नमस्कार के साथ–साथ क्रमशः शीर्षासन, पद्मासन, चक्रासन, वृकासन और भुंजगासन भी करवाये गये।

कार्यक्रम के अंत में श्रीमती दीप्ति कांडा ने प्रिंसीपल महोदया का धन्यवाद किया एवं यह विश्वास दिलाया कि भविष्य में भी ऐसे सार्थक कार्यक्रम आयोजित किये जाते रहेंगे। इस अवसर पर कॉलेज के अन्य प्राध्यापकगण एवं कर्मचारीगण भी उत्साह पूर्वक उपस्थित रहे।

आर्य समाज (अनारकली) ने योग दिवस मनाया

आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में इस वर्ष रविवारीय साप्ताहिक सत्संग में प्रातः 9 बजे से 11.30 बजे तक अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। आर्य समाज की पवित्र यज्ञशाला में बृहद्यज्ञ का आयोजन हुआ। सी.एल. भल्ला दयानन्द मॉडल सी.से. स्कूल, झण्डेवाला, नई दिल्ली के संगीताचार्य श्री शुभम् ने भक्ति संगीत की प्रस्तुति दी।

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, ईस्ट ऑफ लोनी रोड, दिल्ली के योग, धर्म एवं संस्कृत शिक्षक डॉ. कमलदीप शास्त्री ने ध्यान और योगाभ्यास करवाते हुए योग के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा योग शरीर के समस्त अवयव पूर्णतः स्वस्थ बनाकर काया को निरोग बना देता है। अतः योग को नियमित दिनचर्या में शामिल करें और निरोग व स्वस्थ रहें। उन्होंने यह भी कहा कि प्राणायाम एवं व्यायाम का अभ्यास शरत व हेमंत ऋतु (अक्टूबर से दिसम्बर) में करना चाहिए। स्व+अपने में, स्थ+ स्थिर होना ही स्वस्थ की परिभाषा है तथा चित्त की वृत्तियों को बुरे विचार से रोकना ही योग है।

इस दिन प्राणायाम–कपाल भाति, भसिका, अनुलोम–विलोम तथा वज्रासन, भुजंगासन, धनुरासन, मण्डूकासपन, मयूरासन आदि आसनों का अभ्यास करवाया। इस योग दिवस में लगभग 170 लोगों ने भाग लिया।

आर्य समाज के कार्यकारी प्रधान श्री अजय सूरी, स्त्री आर्य समाज की प्रधाना, श्रीमधु ओमचारी, सहमंत्री श्रीमती स्नेह मोहन ने योगाचार्य डॉ. कमलदीप शास्त्री, संगीताचार्य श्री शुभम् एवं अन्यों का पुष्पहार से स्वागत किया। आगन्तुक सत्संग एवं योग प्रेमियों का धन्यवाद किया गया। अंत में शांतिपाठ एवं प्रसाद वितरण हुआ।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 27\28-06-2018

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पक्खोवाल रोड लुधियाना में राज्य स्तरीय वैदिक चेतना एवं चरित्र निर्माण शिविर

आर्य युवा समाज (पंजाब) की ओर से डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, पक्खोवाल रोड, लुधियाना में राज्य स्तरीय पंच दिवसीय वैदिक चेतना एवं चरित्र निर्माण शिविर (लड़कियों के लिए) आयोजित किया गया। इस शिविर में पंजाब भर के 30 डी.ए.वी. स्कूलों से लगभग 250 छात्राओं और 50 अध्यापिकाओं ने भाग लिया। शिविर के आयोजन का उद्देश्य उभरती हुई युवतियों को सशक्त बनाकर उनके भावी जीवन के लिए तैयार करना है।

श्रीमती ममता आशू ने शिविर का औपचारिक उद्घाटन किया। स्वामी सूर्य देव ने दैनिक यज्ञ करवाया। स्वामी सूर्य देव ने कहा कि महान बनने के लिए ज्ञान अर्जन करने और परिश्रम करने की आवश्यकता है। उन्होंने बच्चों को अपने राष्ट्रीय प्रतीकों और राष्ट्रगान का सम्मान करने का भी आह्वान किया।

शिविर की प्रतिदिन की गतिविधियों को सुचारू ढंग से कार्यान्वित करने हेतु एक नियमित समय सारणी बनाई गई जिसका पूरी श्रद्धा और अनुशासन से पालन किया गया। शिविर में प्रतिदिन पंच कुण्डीय हवन का आयोजन किया गया। नगर के विशिष्ट महानुभावों को यजमानों के रूप में आमंत्रित किया जाता रहा। प्रिंसीपल आर.सी. जीवन, श्री रोशन लाल आर्य, कैप्टन वी.के. स्याल, श्रीमती सुदेश गंधार श्रीमती मधुबहल, डॉ. विक्रम विवेकी, डॉ. अनु वर्मा, डॉ. नरोत्तमा तथा श्रीमती शिवनेत्रि मौदिगल ने बच्चों को चरित्र के महत्व नैतिक मूल्यों के विकास, नारी सशक्तिकरण, ईश्वर की पहचान एवं व्यक्तित्व विकास जैसे विषयों पर संबोधित किया। शारीरिक ऊर्जा और एकाग्रता को बढ़ाने के लिए स्कूल के बैडमिंटन कोर्ट में सभी अध्यापक एवं बच्चे प्रतिदिन योगाभ्यास करते।

बच्चों के वैदिक तथा सामान्य ज्ञान में वृद्धि करने के लिए एक अद्भुत खेल 'कौन बनेगा आर्यरत्न' का भी आयोजन किया गया।

बच्चों में सामाजिक तथा सांप्रदायिक सद्भावना का गुण विकसित करने के लिए महान दूरदर्शी महर्षि दयानंद जी के जीवन पर आधारित 'युग दृष्टा युग स्रष्टा' वृत्तचित्र भी दिखाया गया एवं पद्म श्री पूनम सूरी जी के विभिन्न अवसरों पर युवाओं को सम्बोधित करते हुए दिए गए प्रेरक विचारों को भी श्रव्य दृश्य माध्यम से उन तक पहुँचाने का प्रयास किया गया।

बच्चों को सूचनात्मक और शैक्षणिक गतिविधियों जैसे शास्त्रीय नृत्य, संगीत और शिल्प कला, गेल प्ले, नुक्कड़ नाटक, भाषण प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया। आत्मरक्षा हेतु मार्शल आर्ट्स का प्रशिक्षण दिया गया। शाम के समय सभी छात्राएँ मिलकर भजन गायन करती थीं और उस परम परमात्मां से आशीर्वाद प्राप्त करतीं।

शिविर के समापन समारोह पर श्री जे.पी. शूर (प्रधान, आर्य प्रादेशिक उपसभा, पंजाब), पद्म भूषण डॉ. एस.एस. जौहल (उपाध्यक्ष, डी.ए.वी. पक्खोवाल) विशेष रूप से उपस्थित हुए। स्थानीय प्रबंधकर्त्री समिति के वरिष्ठ सदस्य श्री धर्म पाल जैन व कई डी.ए.वी. स्कूलों के प्रधानाचार्या भी आए। श्री जे.पी. शूर ने बच्चों को मानव जीवन के वास्तविक अर्थ व त्यागपूर्ण सेवाओं से अवगत करवाते हुए प्रधानाचार्या डॉ. सतवंत कौर भुल्लर को इस शिविर के सफलतापूर्वक सम्पन्न होने पर बधाई दी। प्रधानाचार्या ने सभी के सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया और कहा कि डी.ए.वी. प्रबंधकर्त्री समिति के प्रधान पद्मश्री पूनम सूरी का स्वप्न है कि ऐसे शिविरों के माध्यम से देश के युवाओं को जागरूक बना कर जिम्मेदार नागरिक बनाया जाए। हम सब उनके इस स्वप्न को साकार करना अपना धर्म समझते हैं और इसे पूर्ण करने के लिए यत्नपूर्वक कार्यरत रहेंगे।

दयानन्द मॉडल स्कूल जालंधर में लगा वैदिक चेतना एवं चरित्र निर्माण शिविर

दयानन्द मॉडल स्कूल, मॉडल टाउन, जालंधर में वैदिक चेतना एवं चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया गया । इस शिविर में पंजाब प्रांत के अलग–अलग डी.ए.वी. स्कूलों के लगभग 150 विद्यार्थियों और 30 अध्यापकों ने हिस्सा लिया। आचार्य महावीर श्री मुमुक्षु ने छः दिन लगातार अपने अमूल्य विचारों और वैदिक मूल्यों से बच्चों को अवगत कराया। जस्टिस श्रीमान एन.के. सूद (वाईस प्रेसिडेंट डी.ए.वी.सी.एम.सी. नई दिल्ली) एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अरुणिमा सूद, श्रीमान अरविन्द घई (सेक्रेट्री डी.ए.वी. सी.एम.सी. नई दिल्ली) एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रश्मि घई जी ने इस छः दिवसीय कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

चेतना शिविर में आए हुए विद्यार्थी प्रातः जल्दी उठकर योगाभ्यास करते, उसके बाद वैदिक मंत्रों के उच्चारण द्वारा यज्ञ करते। यज्ञ के पश्चात विद्यार्थी आचार्य महावीर मुमुक्षु के मूल्यवान विचारों को ग्रहण करते। इसके अतिरिक्त अन्य गतिविधियों में भाग लेते जैसे भजन गायन, मंत्र गायन, वैदिक प्रश्नोत्तरी, भाषण प्रतियोगिता एंव चित्रकला प्रतियोगिता आदि। दोपहर के भोजन के बाद बच्चों को आर्य समाज एवं देश भक्तों से सम्बंधित प्रेरक चलचित्र भी दिखाए जाते थे, शाम के खेलकूद कार्यक्रम के बाद सायं कालीन संध्या का भी आयोजन नन्हें आर्यों के लिए किया जाता था। यह सभी गतिविधियाँ बच्चों को जिन्दगी में आगे आने वाली चुनौतियों का डटकर सामना करने में सक्षम बनाने वाली थी। वैदिक चेतना शिविर में बच्चों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए शुद्ध, सात्विक और पौष्टिक भोजन का इंतजाम किया गया था।

चेतना शिविर के समापन समारोह में श्रीमान जे.पी. शूर (डायरेक्टर पी.एस.–I डी.ए.वी.सी.एम.सी. नई दिल्ली) की मौजूदगी ने पूरे कार्यक्रम को चार चाँद लगा दिए। उन्होंने पूरे जोश से इस चेतना शिविर में आए हुए बच्चों को सम्बोधित किया और कहा कि इस आधुनिक युग में बच्चों के अन्दर नैतिक मूल्यों की आवश्यकता बहुत अधिक है, केवल डी.ए.वी. संस्थाएं ही ऐसी हैं जो इस आवश्यकता को पूर्ण करने में सक्षम हैं।

विद्यालय के प्रधानाचार्य श्रीमान विनोद कुमार ने चेतना शिविर में आए हुए सभी दिग्गजों का उनके सफल निर्देशन और समर्थन के प्रति आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में भी ऐसे ही शिविर आयोजित किए जायेंगे।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**